

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

जनवरी - I - 2023



अंक - 19

माउण्ट आबू

Rs.-10

मानसिक प्रदूषण की समाप्ति के लिए राजयोग मेडिटेशन जरूरी



भव्य एवं विशाल राजयोग मेडिटेशन सेंटर 'पीस पैलेस'

राज्यपाल ने 'पीस पैलेस' को समाज सेवा के लिए किया समर्पित और कहा...

ब्रह्माकुमारी संस्थान मनुष्य में देवत्व का भाव जगाने में जुटी है

निगेटिविटी को पॉजिटिविटी में बदलने का काम करेगा यहाँ का थॉट्स लैब

जयपुर-राज. स्वस्थ जीवनशैली के लिए मानसिक प्रदूषण से मुक्ति जरूरी है और मानसिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए राजयोग मेडिटेशन आवश्यक है। इस दिशा में 'पीस पैलेस' समाज में शांति, प्रेम, पवित्रता और सद्भावना की स्थापना में अहम भूमिका निभाएगा। उक्त उद्गार राज्यपाल

कलराज मिश्र ने ब्रह्माकुमारी के मुरलीपुरा स्थित 'पीस पैलेस' ओम शांति मेडिटेशन सेंटर का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि परमार्थ को लेकर जब हम विश्व कल्याण के लिए जुट जाते हैं तो शांति का भाव प्रकट होता है। यहाँ आकर मुझे भी अद्भुत शांति की अनुभूति हुई।

एक सराहनीय पहल 'थॉट्स लैब' -

राज्यपाल ने कहा कि यहाँ आकर पहली बार थॉट्स लैब के बारे में पता चला। मन में एक साथ कई विचार आते हैं, अच्छे, बुरे सभी। पर उसी निगेटिविटी को पॉजिटिविटी में बदलने का कार्य इस थॉट्स लैब में किया जाएगा। जो अपने आप में एक अनोखी और सराहनीय पहल है।

विश्व की नारी द्वारा संचालित सबसे बड़ी संस्था -

राज्यपाल मिश्र ने कहा कि ब्रह्माकुमारी विश्व की नारी द्वारा संचालित सबसे बड़ी संस्था है। हमारी संस्कृति में भी नारी को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। कहा जाता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। यह संस्था मनुष्य में देवत्व का भाव जगाने में जुटी है। ब्रह्माकुमारी द्वारा प्रति वर्ष अभियान चलाकर बड़ी संख्या में पौधारोपण किया जाता है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में संस्था की यह अनुकरणीय पहल है। संस्था द्वारा व्यक्तित्व निर्माण का जो कार्य किया जा रहा है वह आज बहुत जरूरी है।

भारत फिर से देवभूमि बनेगा -

ब्रह्माकुमारी के कार्यकारी सचिव एवं शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने कहा कि भारत को देवभूमि, स्वर्ग भूमि, भ्रष्टाचार मुक्त, अपराध मुक्त, प्रदूषण मुक्त बनाने और निःशुल्क

शिक्षा के स्वप्न को साकार करने के लक्ष्य को लेकर संस्थान 86 वर्षों से कार्य कर रहा है। इसके साथ ही लोगों के थॉट्स के लेवल को पॉजिटिव और पावरफुल बनाने के लिए शिक्षा प्रभाग द्वारा देशभर में थॉट्स लैब की स्थापना की जा रही है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों के विचारों

को पॉजिटिव और पावरफुल बनाने के लिए सेवाएं चल रही हैं। माउण्ट आबू से आई वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, अजमेर सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु.शांता बहन, पीस

पैलेस भवन की स्थापना में अहम भूमिका निभाने वाले व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के उपाध्यक्ष एम.एल. शर्मा तथा डॉ. प्रो. मुकेश ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया। कार्यक्रम संचालन शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सुमन बहन किया

एवं आभार पीस पैलेस की निदेशिका ब्र.कु.हेमा दीदी ने माना। इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष (राज्य मंत्री रिको दर्जा प्राप्त) सीताराम अग्रवाल, स्टेट ह्यूमन राईट कमिशन की डिप्टी सेक्रेटरी सीमा शर्मा, डॉ. आर.पी. खेतान, डायरेक्टर खेतान हॉस्पिटल, डॉ. संजय बियानी, डायरेक्टर

बियानी ग्रुप ऑफ कॉलेज, जगदीश सोमानी, अध्यक्ष रैक्रिएशन क्लब वीकेआईए सहित शहर के गणमान्य जन उपस्थित थे। साथ ही इस मौके पर जयपुर सहित अजमेर, बीकानेर और माउण्ट आबू से आये हज़ारों ब्र.कु.भाई-बहनें मौजूद रहे।

राज्यपाल मिश्र ने रिबन काटकर और शिला पट्टिका का अनावरण कर किया उद्घाटन

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में जयपुर, अजमेर, बीकानेर से शामिल हुए लोग

प्रशासनिक चुनौती में सफल होने के लिए अध्यात्म को अपनारें

ब्रह्माकुमारी के प्रशासनिक सेवा प्रभाग द्वारा प्रशासकों के सशक्तिकरण के लिए कार्यक्रम का आयोजन

जम्मू-248ए ब्रह्माकुमारी रोड।

ब्रह्माकुमारी के प्रशासनिक सेवा प्रभाग एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा 'दया और करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय के तहत 'सुशासन और सतत् प्रगति के लिए प्रशासकों का सशक्तिकरण' विषयक कार्यक्रम में अरुण कुमार मेहता, आईएएस, मुख्य सचिव जम्मू-कश्मीर यूटी ने कहा कि अध्यात्म समय की आवश्यकता है। हमें बुराइयों को सहना नहीं चाहिए और न

ही शिकायत करनी चाहिए, हमें उनसे लड़ना चाहिए, तभी हमारी आत्मा शुद्ध हो सकती है। हम इसे योग की मदद से हासिल कर सकते हैं जो ईश्वर से जुड़ने का तरीका है। रमेश कुमार, आईएएस, संभागीय आयुक्त जेएडके यूटी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। जे पी शर्मा, उपकुलपति स्कास्ट, जम्मू ने कहा कि दया और करुणा मानवता के लिए अमूल्य गुण हैं। हम आध्यात्मिक रूप से मजबूत हों, तभी हम इन गुणों का उपयोग कर सकते हैं। राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी, प्रभारी ब्रह्माकुमारी जम्मू-कश्मीर/लद्दाख ने शब्दों से सभी का स्वागत किया।



राजयोगिनी ब्र.कु. विधात्री, फैकल्टी-एडमिनिस्ट्रेटर विंग एवं ओ.आर.सी. गुरुग्राम ने कहा कि समाज के लिए प्रशासनिक वर्ग का काम उचित, सुखद

और आसान होना चाहिए। वैराग्य, दया, करुणा, दृढ़ इच्छा शक्ति और ईश्वर में अटूट विश्वास से किसी भी समस्या का समाधान आसानी से किया जा

सकता है। प्रशासकों में इन गुणों का होना आवश्यक है ताकि वे बड़ी से बड़ी चुनौती को भी पार कर सकें। राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी, उत्तरी क्षेत्र

समन्वयक, प्रशासनिक सेवा प्रभाग एवं प्रभारी, ब्रह्माकुमारी मोहाली ने प्रभाग एवं इसके नवीनतम प्रोजेक्ट्स के बारे में बताया। राजयोगी ब्र.कु.रतन भाई, उत्तरी क्षेत्र समन्वयक, यूथ विंग, ब्रह्माकुमारी ने ब्रह्माकुमारी संस्थान का परिचय दिया। धन्यवाद ज्ञापन राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मल दीदी, प्रभारी, ब्रह्माकुमारी गांधी नगर जम्मू ने किया। कार्यक्रम का संचालन राजयोगी ब्र.कु. रविंदर भाई, उत्तरी क्षेत्र समन्वयक स्पोर्ट्स विंग ब्रह्माकुमारी ने किया। कार्यक्रम में उच्चाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में ब्रह्माकुमारी संस्थान से जुड़े लोग शामिल रहे।

सत्य... सत्य ही रहता है

समाज किसी को भी तुरंत अपनाने को राजी नहीं होता। हमेशा भावनात्मक बहाव में या अपनी शक्ति की कमी के कारण या धर्म के बहाव में बिना कुछ सोचे-समझे विरोध करना, ये हमारी नियति है। और इसी नियति की वजह से हम दुःखी हैं। अगर ये दुनिया में कहा गया है कि परमात्मा ने अपने जैसा इंसान बनाया, तो कुछ तो इसमें सच्चाई होगी। वैसे इंसान दिखने भी तो चाहिए। वैसे दिखाई नहीं दे रहे हैं। क्योंकि जब ऐसे इंसान होंगे, तो हमारे जैसे नहीं होंगे। इसलिए सत्य तो सत्य है। उसमें कुछ भी मिलावट नहीं हो सकती। सबको पता है, पत्थर में भगवान नहीं होते। सबको पता है भगवान इधर-उधर नहीं हो सकते। फिर भी कोई भी इस चक्रव्यूह से बाहर निकले तब तो समझे ना!

मूर्ति पूजक बहुत हुए इस संसार में, और उनकी भक्ति भी बहुत प्रगाढ़ थी। लेकिन वे सबके लिए हर जगह प्रसिद्ध नहीं हुए। कारण, सही रूप से उन्होंने भगवान का सिमरण नहीं किया। कोई आंचलिक स्तर पर, कोई प्रादेशिक स्तर पर, तो कोई राष्ट्रीय स्तर पर जरूर प्रसिद्ध हुए होंगे, लेकिन उनका उदाहरण भक्ति हेतु



स्व.कृ. गंगाधर

थोड़ा बहुत दिया जाता है, उन्हें पढ़ाया नहीं जाता। पढ़ा या पढ़ाया उनको जाता है, जो हमेशा सत्य होता है, सत्यता की बात करता है, सत्यता के साथ रहता है और सत्य को जीता है। अर्थात् सत्य शुरू में जरूर स्वीकार्य नहीं होता लोगों को, लेकिन बाद में उनके गुण सभी को बहुत आकर्षित करते हैं। इसीलिए जितने भी वास्तविक संत-महात्मायें हुए, उन्हीं को आज पाठ्यक्रमों में शामिल कर पढ़ाया जाता है, औरों को नहीं। सत्य को पहचानना पहली वरियता, उसपर अमल करना दूसरी, और यही इन संतों ने किया। आज भी कुछ जाग्रत लोग हैं, जो इन आडम्बरों का विरोध करते तो हैं, लेकिन अपने निजी स्वार्थ के लिए।

सत्य क्या है? सत्य की परिभाषा क्या है? सत्य जो सर्व स्वीकार्य हो, मान्य हो वो होता है ना! तो आप अपने से शुरुआत करें, देखें कि क्या आप सभी को मान्य हैं, स्वीकार्य हैं? हमारे हिसाब से तो नहीं। क्योंकि सभी को आपसे कुछ न कुछ शिकायत जरूर है। इसका मतलब कुछ झूठ है जो हमारे साथ जुड़ा हुआ है। तभी तो लोग हमसे संतुष्ट हैं। सब लोग सत्य सुनना चाहते हैं, सत्य के साथ रहना चाहते हैं, सत्य बोलने के लिए कहते हैं, लेकिन आस-पास का माहौल देखते हुए उसमें ढलने के कारण उसको स्वीकार करते हुए कह देते हैं कि आज तो झूठ का बोलबाला है, सच्चे का मुँह काला है। इसका मतलब आज जो सच बोले वो इस दुनिया से कहीं और डोले। लोग उसे अपनी बिरादरी का नहीं मानते। कहते हैं ये तो इस दुनिया में रहने लायक नहीं हैं, ये तो राजा हरीशचन्द्र है। इसका मतलब आज भी राजा हरीशचन्द्र सत्य का एक मिसाल है, जो सबके लिए एक उदाहरण है। इसलिए सच क्या है? क्यों सबको इतना आकर्षित करता है? आप भी सोचो, हम भी सोचेंगे।

उपरोक्त बातों से आपको ये नहीं लगता कि जिन्होंने अपने ऊपर काम किया, सत्य को जाना, उस परम सत्य को पहचाना, अपने दिल की सुनी, समाज, मान्यता, आडम्बर का पुरजोर विरोध किया, लोगों ने उन्हीं को स्वीकार किया, चाहे वो किसी भी धर्म, जाति का हो। आप हमारे सामने बैठकर परम सत्य के बारे में बहस को लेकर विरोध जरूर कर सकते हैं, लेकिन आप इन सब आत्माओं को स्वीकार तो करते हैं ना! ये है सत्य और उससे जुड़ी हुई एक अद्भुत, अकल्पनीय मान्यता, जिसे सब स्वीकार करेंगे ही करेंगे। और यही परमात्मा चाहता है कि बहुत कम लोग मुझे और तूझे समझ पायेंगे। क्योंकि सत्य की राह पर चलना बहुत आसान होता है, क्योंकि इस राह पर भीड़ कम होती है। आज हम भीड़ में भेड़ चाल चल रहे हैं, क्योंकि हम डर रहे हैं। अरे भाई! कुछ अलग दिखना चाहते हो और देखना चाहते हो, तो कुछ अलग हटकर, सत्य को पहचानकर उसे अपनाना पड़ेगा।

बाप के प्यार का रिटर्न है... स्वयं को टर्न करना

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

देखो, बाबा का हम बच्चों से कितना प्यार है। बच्चों की जरा भी कमी देख नहीं सकता है। जिससे भी प्यार होता है, उसकी छोटी-भी कोई ऐसी-वैसी बात सुनेंगे तो बुरा लगेगा। आपकी नहीं है, है दूसरे की लेकिन ऐसी बुरी लगेगी, जैसे मेरी है। तो बाबा का तो आत्मिक प्यार है, परमात्म प्यार है। तो बाबा ने यह विशेष प्रोग्राम बनाया कि जो भी कमजोरियाँ हैं, कमियाँ हैं क्योंकि यह अन्तिम काल है और सबका अन्तिम काल आना ही है। फिक्स नहीं है, कभी भी किसी के पास आ सकता है। मम्मा का बहुत अच्छा एक स्लोगन था- “हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझो।” तो अन्तिम घड़ी में और कुछ याद नहीं आवे, कोई देवता याद आवे, अच्छी बातें याद आवें क्योंकि अन्त मति सो गति होती है ना! एवररेडी रहेंगे तो अन्त सुहानी होगी।

बाबा की ऐसी एलर्ट रहने की नेचर थी तो बच्चों को भी एलर्ट रखता था। तो हमें भी अभी ऐसा एलर्ट रहना चाहिए क्योंकि बाबा को बिल्कुल सुस्ती अच्छी नहीं लगती थी। कैसा भी पेपर आवे, उसमें हम पास होकर दिखावें। करेंगे, देखेंगे... यह शब्द बाबा को बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं। लेकिन अगर बाबा से प्यार है, वो तो सबका 100 परसेंट है, उसके लिए तो बाबा ने हमें सर्टीफिकेट दिया। बाकी और कोई सब्जेक्ट में ऐसी रिजल्ट नहीं है। बाबा से प्यार है तब तो मजबूरी से ही सही, चल रहे हैं। परन्तु प्यार का रिटर्न केवल इतना ही नहीं होगा। बाकी जो सब्जेक्ट रहे हुए हैं, उसमें भी समान तो बनना पड़ेगा ना!

बाबा कहते मुझे और कोई रिटर्न नहीं चाहिए, एक शब्द में तुम अपने

को टर्न कर लो। टर्न और रिटर्न। इसमें फायदा तो हमको ही होगा, तब बाबा कहते अपने को टर्न करो, इसमें दूसरे को नहीं देखना होता है क्योंकि अपने को बचाने के लिए, अपनी गलती दूसरे के ऊपर रखेंगे। दूसरे को देख के करने से दूर की नजर तेज हो जाती है। फिर दूसरे की गलती सहज दिखाई देती है तो कहते हैं ये तो यह भी करते हैं इसलिए सब चलता है, होता है। अब चलेगा तो सही क्योंकि सब नम्बरवार हैं, लेकिन मेरे को क्या देखना है? तो जो दूसरों को ज़्यादा देखते हैं, उन्हीं के आधार पर जो अपनी गलती भी उनके ऊपर छोड़ने की कोशिश करते हैं, वो आलसी और अलबेले हो जाते हैं। “मैंने किया” अन्दर समझ रहे हैं लेकिन बाहर से सिद्ध जो करेंगे वो यह कहेंगे यह हुआ ना, यह किया ना... इसलिए हुआ। यही तो पेपर है ना, हमारे सामने छोटी-छोटी बातों के माध्यम से पेपर आते हैं। जहाँ भी जायेंगे, वहाँ यह पेपर आयेगा जरूर, कोई न कोई रूप चेंज होकर। इसलिए खुद को बदलो, औरों को बदलो, इसके लिए बदलना है ज्ञान और योग के हिसाब से न कि सेंटर के हिसाब से या साथी के हिसाब से। तो यह थोड़ी हिम्मत रखो। थोड़ी-सी बात हुई तो क्या करें, कैसे करें... वेस्ट थॉट शुरू होते हैं।

बाबा ने कहा किसकी फालतू बातें, गन्दी बातें सुनना यह भी वास्तव में पाप है क्योंकि हमने अपना टाइम तो वेस्ट किया। सुनने से कुछ न कुछ बात याद आती है इसलिए बाबा कहते युक्ति से अपने को टालने की कोशिश करो। अभी यह सब बातें भूल के सेकण्ड में अशरीरी हो जाने की प्रैक्टिस करो।

कर्म करते भी मेरी बुद्धि शुद्ध है, परमात्मा बाप से जुटी है तो मैं योगी हूँ...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

प्रश्न : यदि कोई सेवा में बहुत बिजी है, योग के लिए समय नहीं मिलता- तो क्या वह कर्मातीत अवस्था तक पहुँच सकेगा?

दादी जी- मेरा अनुभव कहता है कि जिन कर्मबन्धनों में हम फंसे हैं, उन सबसे फ्री होने के लिए इतने ही श्रेष्ठ कर्म चाहिए। सिर्फ योग ही काम नहीं करता। योग भी तब लगेगा जब श्रेष्ठ कर्म होंगे। योग से हमारे पास्ट कर्मों का हिसाब-किताब भी चुकू तब होता है जब अभी श्रेष्ठ कर्म साथ-साथ हैं। योग से बुद्धि अशुद्ध से शुद्ध बनती है। आप निगेटिव छोड़ दो, साधारण व व्यर्थ संकल्प छोड़ दो, शुद्ध सकारात्मक संकल्प करो... इसके लिए टाइम की जरूरत नहीं है। कर्म करते भी मेरी बुद्धि शुद्ध है, परमात्मा बाप से जुटी हुई है तो मैं योगी हूँ। अगर मेरी बुद्धि शुद्ध नहीं है, किसी बात का असर है, कोई सोच-विचार व चिंतन है तो मैं योगी नहीं। इसलिए योग में श्रेष्ठ कर्म हमें बहुत मदद करते हैं। कई बार 18 घंटे सेवा करते भी यह फील नहीं होता कि सेवा के कारण मुझे आराम ही नहीं मिलता। सेवा तो मुझे दुआएं देती है। सेवा अगर मेरे जीवन में न होती तो हम जिंदा ही नहीं होते। जिंदा होते भी तो किस काम के! दूसरों को हमारे द्वारा बल मिले, शान्ति मिले। अगर मुझ आत्मा से अनेकों को सहयोग मिला तो वह सहयोग ही सिद्ध करता है कि हम योगी हैं। हम योग लगाते हैं बाबा से सहयोग लेने के लिए। योगी ही सबका सहयोगी बनता है। सेवा माना सहयोगी बनना, हर बात में हाथ बढ़ाना। बुद्धि की मदद करना, दिल से शुद्ध वायब्रेशन की स्नेह भरी मदद करना। यह योग-सहयोग एक होता जा रहा है। इतनी यज्ञ सेवा सबके सहयोग से हो रही है, किसमें कोई विशेषता है, किसमें कोई ईश्वरीय परिवार का स्नेह और सहयोग भी हमको योगयुक्त बनाता है। तो हम कर्म और योग को अलग नहीं कर सकते। यज्ञ सेवा करना भी किसके भाग्य में हो। संगठन में रहना भी किसके भाग्य में हो। कभी अपनी जीवन साधारण नहीं

समझो। बाबा ने मुझे भाग्य दिया है कर्म करने का। इससे बड़ा योग और क्या है। यह मेरे योग की, शुद्ध संकल्प की कमाल है। दिल सच्ची है तो आत्मा को जिस घड़ी, जिस सेवा की जरूरत है वह बाबा करा लेता है। सिर्फ हमें हाँ जी करना है। हम कभी यह कह नहीं सकते कि हमें योग लगाने का टाइम नहीं मिलता, जो सेवा मिलती है मैं उसमें खुश हूँ, बाबा का मेरे पर अधिकार है। मेरी पर्सनल उन्नति-मेरी सच्चाई से, सम्बन्ध से, बुद्धि कहाँ लौक न हो, गम्भीरता, सयानप मेरे पास हो, ईमानदारी मेरे पास हो, इसी से होगी। मैं सेवा छोड़कर योग में बैठ जाऊँ, नहीं। मेरा दिल खाता है। जिस सेवा अर्थ आई हूँ, वह मुझे बजानी है। जिस घड़ी जो काम है वह ईमानदारी व सच्चाई से करना भी योग है। तो हर बात में सच्चा सहयोगी बनने वाला ही अपना सुंदर रिकॉर्ड बाबा के पास रखता है। बस बाबा मुझे और कुछ नहीं चाहिए, आपका सहयोग हो और जितना मुझ आत्मा से हो सकता है, श्रेष्ठ कर्म करता चलूँ- इससे कर्मातीत अवस्था बनी पड़ी है। कर्मातीत बनने वालों की भी लाइन लग जायेगी।

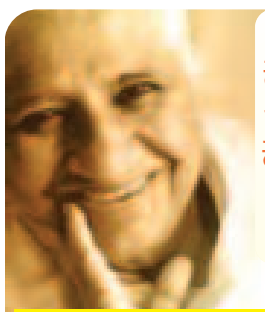
प्रश्न : पाप कर्म क्या है?

दादी जी- पाप वह है जहाँ कॉन्सेस खाता है। विवेक खाता है- वह नहीं करना चाहिए। पुण्य वह है जिसमें अपना कॉन्सेस माने कि यह काम ठीक हुआ। मन उल्टा-सीधा दोनों करता है। बुद्धि जानती है यह उल्टी बात है या सीधी बात है, तो भी संगदोष या पुराने संस्कारवश उल्टा कर लेती है। पीछे विवेक खाता है। विवेक किसी की भी छोड़ता नहीं है। बुद्धि प्रभाव में आई, संस्कारों के वश हुई, विवेक नहीं छोड़ता। जब एकांत में होगा, शान्त होगा तो विवेक अंदर मारता है। किसी ने बुरा नहीं किया होगा तो सीधा कहेगा मैंने नहीं किया, मेरा विवेक नहीं कहता। तो जिसमें अपना विवेक खाता है वह काम हमें नहीं करना है। जिस काम के लिए दिल मानती है वह करते चलो।

अपनी बैलेन्स सीट ऐसी बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे

यह संगमयुग पुरुषोत्तम युग है, इसे चढ़ती कला का, वरदानी युग भी कहते हैं। इस युग में आप सबको समर्पित होने का भाग्य मिला है। यह भाग्य भी कोटो में कोई, कोई में भी कोई को मिलता है। तो हमें आप समर्पित पाण्डवों को देख बहुत-बहुत खुशी हो रही है। हम सबकी एक आश है कि हम बाबा को प्रत्यक्ष करें, यह आश अभी तक पूरी नहीं हो रही है, क्यों? हमारी आश है कि हमारे यज्ञ के जो सभी पाण्डव हैं, वह ऐसा करके दिखावे जो हरेक कहे कि मेरी स्थिति बाबा के ज्ञान और योग के अनुसार निर्विघ्न है अर्थात् हम बाबा आपके पक्के ‘मायाजीत बच्चे’ हैं। माया कमजोर करती है वह तो बहुत सुना है। लेकिन अभी हम मायाजीत हैं, ऐसा ठप्पा सभी का लगना चाहिए। ऐसी यहाँ भट्टी की प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष प्रमाण बाबा को मिलना चाहिए। पाण्डव माना ही जिन्होंने प्रीत बुद्धि का प्रत्यक्षफल दिखाया। भल उनके सामने कितनी भी परीक्षाएँ आईं, जंगल में भी जाना पड़ा तो भी विजयी बनकर दिखाया। ऐसे

आप पाण्डव इस पाँच दिन के अन्दर ऐसी एकता की नींव लगाकर जाओ जो आप यहाँ से जहाँ भी जाओ तो सब देखकर कहें कि यह जादू की नगरी से पूरा ही बदलकर आये हैं। जो कुछ भी छोटी-मोटी, तेरी-मेरी बातें हों... सब



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

खत्म करके हम बाबा के सच्चे बच्चे, सच्ची गोदी में बैठकर चलेंगे- ऐसी यहाँ भट्टी करके जाना। योग का अभ्यास तो करना ही है, साथ-साथ इस भट्टी में कुछ नवीनता करके जाना है। जैसे बाबा कहते हैं कि सर्वश त्यागी बनो, वैरागी बनो। समर्पित का अर्थ ही है

सर्वश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी और सच्चे-सच्चे माला के मणके बनकर जायें। हम ‘विजयी माला’ के विजयी रत्न हैं, विजयी रत्न थे इसलिए अभी ‘विजयी

बाबा कहते हैं कि सर्वश त्यागी बनो, वैरागी बनो। समर्पित का अर्थ ही है सर्वश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी और सच्चे-सच्चे माला के मणके बनकर जायें।



रत्न’ बनके ही जाना है क्योंकि बार-बार दिल में यह जरूर आता कि अब घर जाना है या आप समझते हैं हम तो अभी युवा हैं, हमें तो अभी इस दुनिया में रहना है? युवा, बूढ़े सब समझते हैं हमें घर जाना है। कभी-कभी युवा समझते हैं हम तो अभी युवा हैं लेकिन

बाबा कहते आप सब वानप्रस्थी हो, वानप्रस्थी माना युवा नहीं। वानप्रस्थियों की बुद्धि में रहता है कि कभी भी पंछी उड़ जाए, हम तैयार हैं।

तो हमारी आश है कि एक-एक पाण्डव ऐसा अपना बैलेन्स सीट क्लीयर करो, जो धर्मराज भी फूलों से स्वागत करके, सलाम करके वतन में भेजे। सभी बाबा के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे अपना बैलेन्स सीट ऐसा बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे। यह नहीं कि देख तुमने यह गलत किया, यह तू भोग- तो यह सब यहाँ खत्म करके जाओ। क्या यह पॉसिबल है? हमारा रिमार्क है कि अन्त में बाबा बाहें पसार कर कहे आओ बच्चे आओ, ऐसे गले लगाकर वतन में भेज दे, ऐसी स्थिति बनानी है। दिल कहे 100प्रतिशत हमारा यह रिकॉर्ड हो। बाबा की श्रीमत अनुसार हमारा मन-वचन-कर्म हो। बाबा हमें सर्टीफिकेट दे कि यह संस्कारों से, संकल्पों से, दृष्टि, वृत्ति सभी से पास विद ऑनर है। ऐसी कमाल करो तब कहेंगे समर्पित।

विश्व परिवर्तन की आधारशिला-‘महाशिवरात्रि पर्व’

परिवर्तन प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। लेकिन फिर भी परिवर्तन के लिए मानव प्रयास करता ही है और आज तो हम उन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं जबकि हर मानव की अन्तरात्मा की यही आवाज है कि अब तो इस विश्व में कुछ जल्दी से ही परिवर्तन होना चाहिए, क्योंकि आज धर्मसत्ता और राज्यसत्ता, दोनों ही शक्तिहीन हो गये हैं। मानव दुःख को सुख में, अशांति को शांति में, घृणा को प्रेम में, अज्ञान को ज्ञान में परिवर्तन कर पवित्रता-सुख-शांतिमय जीवन व्यतीत करना चाहता है। सर्व आत्माओं की मनोकामना पूर्ण करने वाला एक परमपिता परमात्मा ही है, जिसके अवतरण की यादगार हर वर्ष ‘शिवरात्रि’ के रूप में मनाते हैं।

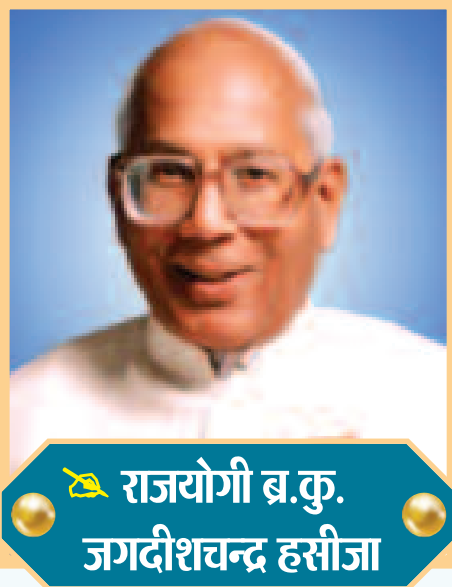
यदि शिवरात्रि के आंचल में छिपे आध्यात्मिक रहस्य को पूर्ण रूप से समझा जाये तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है। क्योंकि शिवरात्रि सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं है, लेकिन सारे विश्व के प्रमुख धर्म, प्राचीन सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को देखें तो स्पष्ट होता है कि यह पावन पर्व विश्व की सर्वात्माओं के लिए ही है। उदाहरण के तौर पर महाभारत में भी लिखा है कि “सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रगट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।” मनुस्मृति में भी यही लिखा

है कि सृष्टि के आरंभ में एक अण्ड प्रगट हुआ जो हजारों सूर्यों के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में ‘धर्म संहिता’ में लिखा है कि कलियुग के अंत में प्रलयकाल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रगट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान

की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदिकाल में परमात्मा ने ही आदम और हव्वा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा। भगवान का नाम ‘जिहोवा’ मानते हैं जोकि शिव का ही पर्यायवाची है। भारत के तो कोने-कोने में शिव की ही यादगार है।

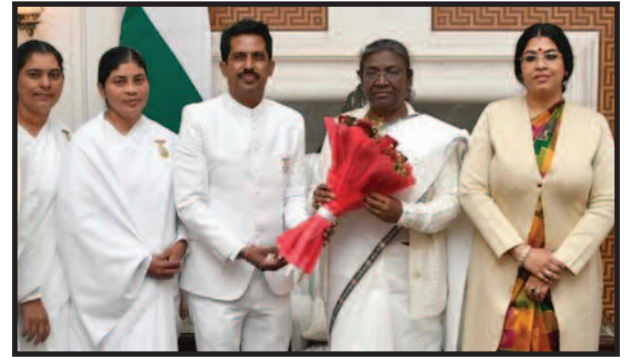
पूरब(काशी) में विश्वनाथ, उत्तर में अमरनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम्, पश्चिम में सोमनाथ, उज्जयनी में महाकालेश्वर, हिमालय में केदारनाथ, बिहार में वैद्यनाथ, मध्यप्रदेश में ओंकारनाथ, द्वारिका में भुवनेश्वर आदि-आदि, केवल भारत में ही नहीं, लेकिन भारत से बाहर विश्व की प्रमुख संस्कृतियों पर भी शिव की छाप है, जैसे नेपाल में पशुपतिनाथ।

इसी प्रकार से बेबीलोन, मिस्र, यूनान और चीन में भी किसी समय शिव की मान्यता किसी न किसी नाम से थी। बेबीलोन में शिव को ‘शिडन’ कहा जाता है। मिस्र में ‘सेवा’ नाम से पूजा होती, रोम में ‘प्रियप्स’ कहते हैं। इटली के गिरिजा घरों में आज भी शिव की प्रतिमा पाई जाती है। चीन में शिवलिंग को ‘हुवेड हिफुह’ कहा जाता है। यूनान में ‘फल्लुस’, अमेरिका के पुरुस्विया नामक स्थान में आज भी ईश्वर को ‘शिवु’ कहते तथा काबा में भी पहले शिव की प्रतिमा थी। इससे सिद्ध होता है कि शिव पिता परमात्मा ने विश्व के कल्याणकारी परिवर्तन के लिए ऐसा विशेष कार्य किया है। इसलिए आज तक शिव की विश्वव्यापी मान्यता है।



राजयोगी ब.कु.
जगदीशचन्द्र हसीजा

था, वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ। देखा जाये तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रंथों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक, ‘तोरत’ का आरंभ भी ऐसे ही होता है, सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरंभ में ईश्वर



नई दिल्ली। महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर शुभकामना देने के लिये ‘सबसे बड़े ग्रीटिंग कार्ड’ का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने वाली टीम के सदस्य ब्रह्माकुमारीज बाणेर पुणे की संचालिका ब्र.कु. डॉ. त्रिवेणी, 175 वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने वाले पहले भारतीय ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके, ब्र.कु. डॉ. सुवर्णा तथा सुप्रसिद्ध एस्ट्रोलांजर, लेखिका और लाइफ कोच डॉ. सोहिनी शास्त्री ने मूलाकात कर उनका अभिनंदन किया व आगे के कार्यक्रमों के लिए शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर इस टीम ने राष्ट्रपति को गुलदस्ता भेंट कर उनका अभिवादन किया।



मुम्बई-डोम्बिवली(पलावा सिटी)। बाल दिवस के कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकु दीदी, सीबीजी एसोसिएशन के चेयरमैन योगेश पाटील, सेक्रेटरी डेनी, जॉइंट सेक्रेटरी श्रीकांत जी, प्रतियोगिता के जजेस एवं सर्टिफिकेट प्राप्त विजेता बच्चे।



विदिशा-म.प्र.। विधायक शशांक भार्गव को पटका पहनाकर सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन एवं ब्र.कु. रुक्मणी बहन।



चेलापुर-तेलंगाना। स्थानीय सेवाकेन्द्र पर कोरोना वॉरियर डॉक्टर्स, नर्सों एवं हॉस्पिटल स्टाफ को मेडल और सर्टिफिकेट से सम्मानित करते हुए ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह तथा ब्र.कु. उमा रानी बहन।



पन्ना-म.प्र.। गीता जयंती के अवसर पर ‘गीता ज्ञान की जीवन में उपयोगिता’ विषय पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन। साथ हैं पंडित राम सुफल शास्त्री, के.एन.पांडे, प्राचार्य, महारानी दुर्गा राजलक्ष्मी, पन्ना, निशा जैन, पूर्व प्राचार्य, शासकीय उच्च विद्यालय, पन्ना तथा मंजूला जैन, एडवोकेट।



गंज बासोदा-म.प्र.। गीता जयंती समारोह में शामिल सभी संतों का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में संत श्री सतानंद चौबे, पंडित कृष्णकांत शर्मा, चंद्रशेखर दुबे, पंडित गौरव कृष्ण शास्त्री, ब्र.कु. रेखा बहन, रुक्मणी बहन तथा अन्य।



राजकोट-गुज.। ब्रह्माकुमारीज के सोशल विंग की ओर से ‘मूल्यों से सम्पन्न समाज’ विषय पर आयोजित कार्यक्रम में समाज सेवकों को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में सोशल विंग की चेयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, गुजरात जोन डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, सोशल विंग की सदस्य ब्र.कु. रीटा बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें। इस मौके पर ब्र.कु. विवेक भाई एवं मधुरवाणी गुप के ब्र.कु. नितिन भाई, माउण्ट आबू भी उपस्थित रहे।



तलेन-म.प्र.। पेट्रोल पंप के मालिक राधारमण तिवारी, रामनारायण तिवारी एवं वरिष्ठ व्यापारी राजेंद्र अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी बहन व ब्र.कु. देव बहन।



सैंधवा-म.प्र.। विधायक ग्यारसीलाल रावत को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. छाया बहन तथा ब्र.कु. साधना बहन।



सिकंदराबाद-तेलंगाना। ‘आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर’ थीम के अंतर्गत यशोदा हॉस्पिटल के कोरोना वॉरियर डॉक्टर्स, नर्सों और स्टाफ को मेडल व सर्टिफिकेट द्वारा सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, ब्र.कु. मंजू बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें। कार्यक्रम में लगभग 100 डॉक्टर्स, नर्सों एवं सभी कोरोना वॉरियर्स मौजूद रहे।



**राजयोगिनी ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ
राजयोग प्रशिक्षिका**

‘शिव जयंती’ या ‘शिवरात्रि’, वैसे देखा जाये तो दोनों ही बहुत उपयुक्त नाम हैं। शिव की जयंती अर्थात् इस संसार की अज्ञान रात्रि के समय जब चारों ओर घोर अंधकार छाया हुआ होता है ऐसे समय पर परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण इस संसार में होता है। शास्त्रों के अनुसार अगर देखा जाये तो शास्त्रों में तीन कथाएं हैं, प्रथम कथा है जिसमें दिखाया गया है कि एक शिकारी शिकार करने जाता है। सारा दिन उसे कोई शिकार प्राप्त नहीं होता, अंधकार होने को आया था तभी उसको एक हिरण दिखाई दिया। पीछा करते हुए जैसे ही उसको मारने जा रहा था कि हिरण ने आकर शिकारी से कहा कि हे शिकारी मैं अपने बच्चों से मिलकर आती हूँ। उसके बाद तुम मेरा शिकार कर लेना। अब रात बिताने और जंगली जानवर के भय से वो एक पेड़ पर चढ़ गया, जो बेल पत्र का पेड़ था। हिरण के इंतजार में उसे कहीं नींद न लग जाये और नीचे न गिर जाये, इसके लिए उसने बेल के पत्ते तोड़कर नीचे डालना आरंभ कर दिया।

प्रसिद्ध कहानियों द्वारा जानें शिवरात्रि का आध्यात्मिक मर्म

उंडी के दिन होने के कारण कांपते हुए उसके मुख से शिव-शिव निकल रहा था। पेड़ के नीचे एक शिवलिंग था जिसपर वे सारे बेलपत्र पड़ते गये। सुबह होने पर हिरण को आता देख वो नीचे उतरने लगा। उसी समय उसके सामने शिव जी प्रगट हुए और कहा तुमने सारा दिन उपवास किया, सारी रात जागरण और मेरी भक्ति की तथा मेरे ऊपर बेलपत्र भी इतने लाखों चढ़ाये, इसलिए आज मुझसे तुम जो माँगोगे मिल जायेगा। कहा जाता है शिव जी इतने भोले हैं कि उस शिकारी ने उस उद्देश्य से न तो जागरण किया था, न उपवास किया था, न बेलपत्र डाले थे। परंतु भोलेनाथ अंजानेपन में भी किये गये कर्म को सहज स्वीकार कर प्रसन्न होकर वरदान दे देते हैं। ये एक कथा है कि कैसे शिव जी प्रगट होते हैं और भक्तों की भावनाओं को पूरा करते हैं।

दूसरी कथा शास्त्रों में ये आती है कि शिव जयंती माना शिव पार्वती का विवाह, अब जयंती के समय विवाह हो ये कुछ सही नहीं लगता है परंतु फिर भी भक्त इसे बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं। और तीसरी कथा ये कि जब समुद्र मंथन हुआ देव-असुर के बीच में और उसमें जब हलाहल निकला तो देवताएं बेहोश होने लगे। तब कहा जाता कि सभी ने शिव जी को पुकारा और शिव जी प्रगट होकर सारा हलाहल अपने कंठ में समा लेते हैं, तो इसको भी शिवरात्रि पर जोड़ दिया गया है कि यही वो दिन है जब शिव जी ने हलाहल को

स्वीकार किया था। अब ये तीन कथाएं भक्ति मार्ग में हम सभी ने सुनी हैं लेकिन सही क्या है? आध्यात्मिक अर्थ के आधार से उसको देखा जाये तो वास्तव में मनुष्य

अमृत कलश को प्राप्त करने के लिए आसुरी वृत्ति वालों ने और दैवी वृत्ति वालों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया। उसमें से सबसे पहले हलाहल निकलता है, ज़हर निकलता है। और नैचुरल है कि उस ज़हर की जो बदबू है उसके कारण

जो देवकुल की आत्माएं हैं वह उसे सह नहीं पाती है और धीरे-धीरे मूर्छित होने लगती है। तब कहा जाता कि परमात्मा शिव ज्ञान के सागर इस संसार में अवतरित होकर वो सारा हलाहल अर्थात् मनुष्य जीवन के अंदर जो ये बुराइयों का ज़हर है, विकारों, विकृतियों का ज़हर है वो स्वीकार कर लेते हैं।

आत्माओं ने भले ही अंजानेपन में अपनी समझ के हिसाब से, जिस भी तरीके से, शिव की आराधना की या उपवास किया, जागरण किया, वास्तव में जागरण कोई चौबीस घंटों वाली बात नहीं लेकिन ये सूचक है कि जब इस संसार में घोर अज्ञानता की रात्रि छा जाती है तब परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण होता है

और ऐसी रात्रि के समय जो अपनी आत्म-ज्योति को जगा लेता है, साथ ही साथ उपवास अर्थात् निरंतर मन का वास प्रभु के साथ अर्थात् मन को उस प्रभु में

एकाग्र करते हैं और भक्ति अर्थात् प्रेम से उस परमात्मा को याद करते हैं और ऐसी जब याद में मग्न स्थिति हो जाती है तो परमात्मा उन भक्तों के हर संकल्प को पूरा करते हैं। दूसरी कथा में कहा कि इस दिन शिव और पार्वती का विवाह हुआ, भावार्थ यही कि जब परमात्मा शिव इस संसार में आते हैं तो जो पार वतन की

आत्माएं हैं अर्थात् परमधाम से जो आत्माएं इस संसार में बहुतकाल से बिछड़ी हुई हैं। ऐसी आत्माओं को परमात्मा अपना बना लेते हैं। ईश्वर उन आत्माओं को अपना बनाकर अपने साथ श्रेष्ठ गति में ले चलते हैं। कुछ आत्माओं की मुक्ति हो जाती है और कुछ आत्माओं की सद्गति हो जाती है।

तीसरी कथा के अनुसार जो कहते हैं कि अमृत कलश को प्राप्त करने के लिए आसुरी वृत्ति वालों ने और दैवी वृत्ति वालों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया। उसमें से सबसे पहले हलाहल निकलता है, ज़हर निकलता है। और नैचुरल है कि उस ज़हर की जो बदबू है उसके कारण जो देवकुल की आत्माएं हैं वह उसे सह नहीं पाती है और धीरे-धीरे मूर्छित होने लगती है। तब कहा जाता कि परमात्मा शिव ज्ञान के सागर इस संसार में अवतरित होकर वो सारा हलाहल अर्थात् मनुष्य जीवन के अंदर जो ये बुराइयों का ज़हर है, विकारों, विकृतियों का ज़हर है वो स्वीकार कर लेते हैं। इसी के सम्बन्ध में शिवरात्रि पर्व पर शिवलिंग के ऊपर धतूरे व आक के फूल चढ़ाते हैं, जोकि बुराइयों का प्रतीक है। जब मनुष्य के जीवन से बुराइयां निकल जाती हैं तब उनके जीवन का शुद्धिकरण हो जाता है और तब उनको अपने समान बनाकर साथ ले चलते हैं अर्थात् वो अमृत कलश प्राप्त होता है और वो अमृतत्व को प्राप्त करते हैं।

हरड़ के अद्भुत फायदे... इस अन्नमोल शरीर के लिए

हरीतकी त्रिफला के तीन फलों में एक होता है। इसे हरड़ भी कहते हैं। आयुर्वेद में हरीतकी औषधि के लिए बहुत इस्तेमाल किया जाता है। हरीतकी न सिर्फ औषधि के लिए बल्कि सेहत और सौन्दर्य के लिए भी बहुत लाभकारी होता है। हरीतकी का फल, जड़ और छाल सबका उपयोग किया जाता है। चलिये हरीतकी के फायदों और गुणों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

हरीतकी क्या है?

निष्पण्डुओं में सात प्रकार की हरीतकी का वर्णन मिलता है। स्वरूप के आधार पर इसकी सात जातियां हैं- 1. विजया, 2. रोहिणी, 3. पूतना, 4. अमृता, 5. अभया, 6. जीवन्ती तथा 7. चेतकी, लेकिन वर्तमान में यह तीन प्रकार की ही मिलती हैं। जिसको लोग अवस्था भेद से एक ही वृक्ष के फल मानते हैं। वैसे तो हरीतकी सभी जगह मिल जाता है। हरड़ का 24-30 मी तक ऊँचा, मध्यम आकार का, शाखाओं वाला पेड़ होता है। इसके पत्ते सरल, चमकदार, अण्डाकार और भाला के आकार के होते हैं। इसके फल गोलाकार, 1.8-3.0 सेमी व्यास या डाइमीटर के और पके हुए अवस्था में पीले से नारंगी भूरे रंग के होते हैं। फलों के पीछले भाग पर पाँच रेखाएँ पाई जाती हैं।

जो फल कच्ची अवस्था में गुठली पड़ने से पहले तोड़ लिए जाते हैं, वही छोटी हरड़ के नाम से जानी जाती है। इनका रंग स्याह पीला होता है। जो फल आधे पके अवस्था में तोड़ लिए जाते हैं, उनका रंग पीला होता है। पूरे पके अवस्था में इसके फल को बड़ी हरड़ कहते हैं। प्रत्येक फल में एक बीज होता है। फरवरी मार्च में पत्तियां झड़ जाती हैं। अप्रैल-मई में नए पल्लवों के साथ फूल लगते हैं तथा फल शीतकाल में लगते हैं। पक्व जनवरी से अप्रैल

महीने में पके फल मिलते हैं। इसके बीज कठोर, पीले रंग के, बड़े आकार के, हड्डियों के समान और कोणीय आकार के होते हैं।

हरीतकी मधुर और कड़वा होने से पित्त; कड़वा व कषाय होने से कफ तथा अम्ल, मधुर होने से वात दोष को नियंत्रित करने में मदद करती है।

हरीतकी के फायदे

आयुर्वेद में हरड़ या हरीतकी का बहुत महत्व है। हरड़ सेवन करने का तरीका हर रोगों के लिए अलग-अलग होता है।



स्वास्थ्य

कफ या खांसी से दिलाये राहत

कफ को निकालने में हरड़ का चूर्ण बहुत अच्छा है। इस कारण हरड़ चूर्ण को 2-5ग्राम की मात्रा में रोज़ सेवन करना चाहिए।

हरड़, अड़सा की पत्ती, मुनक्का, छोटी इलायची, इन सबसे बने 10-30 मिली काढ़े में मधु और चीनी मिलाकर दिन में तीन बार पीने से सांस फूलना, खांसी और रक्तपित्त रोग (नाक और कान से खून बहना) में लाभ होता है।

पाचन शक्ति बढ़ाने में

अगर खाना खाने के बाद हजम नहीं हो रहा है या एसिडिटी आदि की समस्या हो रही है तो हरीतकी के सेवन इस तरह से करने पर लाभ मिलता है। 3-6 ग्राम हरीतकी चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर सुबह शाम भोजन के बाद सेवन करने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

भूख बढ़ाने में करे मदद

कभी-कभी लंबे बीमारी के कारण खाने की इच्छा कम हो जाती है। इस अवस्था में हरीतकी का सेवन करने से लाभ मिलता है। 2ग्राम हरड़ तथा 1ग्राम सोंठ को गुड़ अथवा 250 मिग्रा सेंधा नमक के साथ मिलाकर सेवन करने से भूख बढ़ती है।

नेत्र विकार में फायदेमंद

रूखी होने के कारण भी बाल बहुत झड़ते हैं। हरड़ को इस तरह से प्रयोग करें- आम बीज चूर्ण और छोटी हरीतकी चूर्ण को समान मात्रा में लेकर दूध में पीसकर सिर पर लगाने से रूखी कम हो जाती है।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत-वार्षिक-240 रुपये, तीन वर्ष-720 रुपये, आजीवन-6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 30826907041, IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

OR
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087



SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP



Merchant Name : RERF Om Shanti Media

vpa : 09000r0076184@barodampay





शिव अवतरण



महाशिवरात्रि विशेषांक



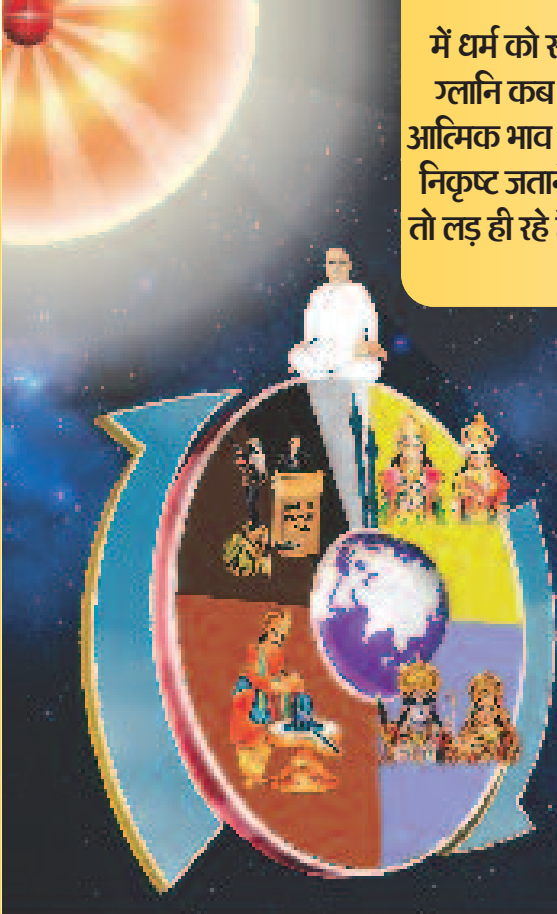
ओमशान्ति मीडिया

यदा-यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत...

शांति का संसार, रच रहे स्वयं परमात्मा शिव निराकार

धर्म की स्थिति किसी से छिपी नहीं है। धर्म चला गया धर्म पिताओं के पास, राज चला गया राजाओं के पास। हमारे अति वंदनीय धर्म पिताओं ने अपने समय

में धर्म को संभाला, धरती को कुछ दिन थमाया, सबको पवित्र रहने में मदद की। धर्म की ग्लानि कब हुई, जब हम धर्म को भूलने लगे। यहाँ भूलने का अर्थ या भाव, बदलने से है। आत्मिक भाव से शारीरिक भाव और हम गिरते चले गये। हर धर्म अपने को श्रेष्ठ और दूसरे को निकृष्ट जताने लगे। कौन उठायेगा... कौन उठायेगा हमें इस शारीरिक धर्म से ऊपर... मनुष्य तो लड़ ही रहे हैं। एक ही आसरा है, एक ही सहारा है, जो ऐसे घोर कलियुग में मनुष्य की बुद्धि को पलट सकता है- वो है परमात्मा, वो है भगवान, वो है ईश्वर!



लड़ाई शुरू होती है एक भाव से, जो हम सभी अच्छे से जानते हैं। वो भाव है शारीरिक। जब हम खुद को शरीर के धर्मों के साथ जोड़ने लगे, वहीं से सारी आपसी खाई शुरू हुई। और ये इतनी गहरी खाई है जिसको पाटना आसान नहीं। सब उस गर्त में गिरते चले जा रहे हैं। किसी के धर्म की स्थापना का आधार मनुष्य का आपसी प्रेम, सद्भाव तथा सच्चे दिल की समीपता है। मानसिक स्तर पर इन चीजों का पूर्णतः अभाव हमें वो सोचने पर मजबूर कर रहा है जो हम करना नहीं चाहते। ज़मीनी हकीकत मनुष्य की यही है कि वो करना नहीं चाहता फिर भी कर रहा है, क्योंकि उसे सही राह दिखाई नहीं दे रही।

ग्लानिर्भवति भारत का अर्थ सही मायने में यही तो है कि जो भारत पहले सोने की चिड़िया, आर्यावर्त, देव भूमि के टाइटल से नवाज़ा जाता था। आज उसे क्या हमें ये टाइटल दे सकते हैं? शायद नहीं। क्योंकि मनुष्य की स्थिति आज दयनीय है। वो सिर्फ कागजीय स्तर पर अपने आपको भारत की महिमा करने के लिए ये सारे शब्द यूज़ कर सकता है लेकिन उसमें अपने आपको फिट नहीं कर पाता है। इस हिचक के कई कारण हो सकते हैं। या तो हम सिर्फ कहने के लिए कह देते हैं कि जब-जब सृष्टि पर धर्म की ग्लानि होती है तो परमात्मा आते हैं, लेकिन फिर लगता है कि यहां परमात्मा कैसे आ सकते हैं! या फिर ये लगता है कि संसार में कब से इतना सबकुछ बुरा तो हो ही रहा है, पर परमात्मा आते ही कहाँ हैं! या फिर ये

कि जब धरती पर असुर होंगे तब भगवान आयेंगे उनसे मुक्ति दिलाने, अभी तो मनुष्य रहते हैं! या फिर हमने शास्त्रों से ये भी सुना है कि कलियुग अभी तो बच्चा है, अभी तो 40 हजार वर्ष पड़े हैं, उसके अंत के समय परमात्मा आयेंगे या अपनी प्रेरणा से ही सृष्टि परिवर्तन का कार्य कर देंगे।

आज से है...

इन पंक्तियों का ताल्लुक

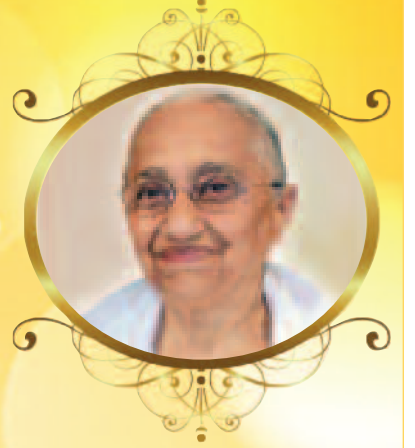
यदि आप इन पंक्तियों को अपने जीवन के साथ जोड़कर देखें तो आप आज के समय, काल और परिदृश्य से भलिभांति परिचित हो पायेंगे और समझ पायेंगे कि यही सही समय है परमात्मा के इस धरा पर अवतरित होने का। आज हम भारत तो क्या, विश्व के किसी कोने पर भी नज़र डालें तो कहीं हमें अपने आंसुओं को छिपाते लोग, तो कहीं एक-दूसरे को सताते लोग, कहीं विनाश की तैयारी करते लोग, तो कहीं किसी का सबकुछ छीन लेने की होड़ में लगे लोग ही नज़र आते हैं। घर टूटते जा रहे हैं। पहले जानवरों से भय लगता था, आज एक मनुष्य ही दूसरे मनुष्य के भय का कारण बन गया है। जानवर तो शायद हमारी मदद भी कर दें! लेकिन इंसान रूपी जानवर से कौन बचाये!

आज किसी के पास किसी के लिए समय नहीं। आप स्वयं को ही देख लें। एरोप्लेन से शहर और

देश तो नज़दीक आ गए पर दिलों में उतनी ही दूरियां होती चली गईं। और इन सबके साथ प्रकृति की स्थिति को भी हम नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। आज चारों ओर प्रकृति विनाश लीला दिखा रही है। कहीं बाढ़, कहीं सूखा, कहीं भूकंप, कहीं कितनी ही प्रकार की दुर्घटनाएँ, ये सब क्या हैं? ये प्रकृति के उस दर्द का परिणाम है जो हम मनुष्यों ने ही उसे दिया है। वो भी त्राहि-त्राहि कर परमात्मा से अपने परिवर्तन का आह्वान कर रही है। और यदि हम मनुष्य दर्द देना ही जानते हैं तो हम मनुष्य नहीं, इंसान नहीं, हममें हैवान का ही वास है। इस हैवानियत को दूर करना आज मनुष्य के वश की बात तो रही ही नहीं। तब भला इससे कौन निजात दिला सकता है? सोचने पर सबकी अंगुली ऊपर जाती कि ये काम तो ऊपर वाले के सिवा कोई कर नहीं सकता। ऐसा ही है ना!

तो हममें से अवगुणों को निकाल पुनः पुरुषोत्तम बनाने, यानी उत्तम पुरुष बनाने ही निराकार शिव परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं। इस घोर कलियुग में चहुं ओर व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार से निकाल ज्ञान के प्रकाश दे मनुष्य आत्माओं में देवत्व जगाने के लिए परमात्मा के अवतरण की याद में ही शिवरात्रि का पर्व इतनी धूमधाम और विधि-विधान से हम मनाते आ रहे हैं। वे अवतरित होकर इस पतित, कलियुगी, पुरानी सृष्टि को परिवर्तित कर नई स्वर्णिम, सतयुगी, देवताई सृष्टि बनाने का कार्य कर रहे हैं।

शुभकामना संदेश



आज चारों तरफ एक ही लहर है कि कोई हमारे मन को तसल्ली दे, हमें प्यार करे, हमारी भावनाओं को समझे। हम सबके दिल की इस आश को पूरा करने, हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं और सभी की मनोकामनायें पूर्ण करने का भगीरथ कार्य कर रहे हैं। हम सभी ने उसे न सिर्फ जाना है बल्कि पहचाना भी है। वो हमारा परमपिता है। हम उनसे पूरा-पूरा सुख ले रहे हैं। हम चाहते हैं कि सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियां हम सबकी नज़रों के सामने होंगी, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। इस महाशिवरात्रि, महान पर्व पर आप सभी को कोटि-कोटि बधाई और शुभकामनायें। - संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी।

बदलाव 'परम शक्ति' से जुड़कर ही होगा



उस परमात्मा, परम शक्ति से योग हमें सब कुछ देगा, हमें स्वयं को बदलने की ताकत भी प्रदान करेगा। हर असंभव कार्य संभव भी हो जायेगा। बस... ज्ञान और अनुभव को बढ़ाने के लिए अपनी सत्य पहचान और परमात्मा की सत्य पहचान कर उससे सम्बंध जोड़ हमें आगे बढ़ना है। इसके लिए अपनी इंद्रियों पर संयम की आवश्यकता है, जिससे हम सम्पूर्ण प्रकृति पर नियंत्रण कर सकें। बस स्वयं को हर पल, हर क्षण जागृत रखने की आवश्यकता है। राजयोग एक ऐसा माध्यम है जिससे हमारे तन और मन दोनों निरोगी रह सकते हैं, और हम नर से नारायण भी बन सकते हैं। - भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

कुछ इनके भी नजरिये परमात्मा के बारे में...

भारत में एक यही संस्थान कर रहा मनुष्य से देवता बनाने का महान कार्य

मन एक साधन है जो हमारे बंधन या स्वतंत्रता का कारण हो सकता है, ये तो इसके उपयोग पर निर्भर करता है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने आम आदमी को आसान तरीके से राजयोग सिखाया है। वे मनुष्य को देवता बनाने का कठिन कार्य कर रही हैं। मूल्य किसी भी राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति है। आज पूरे विश्व में योग के भारतीय विज्ञान की मांग है। ब्रह्माकुमारीजैसे संगठनों ने राजयोग को जन-जन तक ले जाने के लिए बहुत महान कार्य किया है। प्रत्येक भारतीय को इस कार्य पर गर्व महसूस करना चाहिए। भारत में ऐसे संस्थान का होना बहुत ही गर्व की बात है। - माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उ.प्र.



विश्व शांति प्रसार की अद्भुत संस्था



दुनिया भर में शांति का फैलाव करने वाली यदि कोई संस्था है तो वो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। योग के माध्यम से विश्व को शांति प्रदान करने में कोई संस्था यदि यशस्वी पाई गई है तो वो है यह ब्रह्माकुमारी संस्था। पुरुष प्रधान समाज में महिला भी धार्मिक, यौगिक भूमिका निभा सकती है, इसे प्रैक्टिकल कर दिखाने वाली संस्था है ब्रह्माकुमारीज। विश्व में शांति का प्रसार करने में इस संस्था ने महती भूमिका निभाई है। - श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरु चन्ना सिद्धाराम।

मुझे साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ही दिया जाता है। यहां योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई। - रसिक पीठाधीश्वर महंत जन्मेजयशरण, अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट, बड़ा स्थान, अयोध्या।



शास्त्रों में वर्णित दिव्यता का अनुभव यहां हुआ



जिस प्रकार की यहां पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादी जी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। - एच.एच. श्री स्वामी अध्यात्मनंद जी महाराज, अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद।

अब है... पूजने के साथ पूजनीय बनने का समय

मैं रोज़ उनपर दूध की लोटी चढ़ाता हूँ। मैं रोज़ पूजा-पाठ करता हूँ, ध्यान भी लगाता हूँ, और मैंने चारों धामों की यात्रा भी की, कथा भी करता हूँ, फिर भी मुझे जो चाहिए, वो संतुष्टता मुझे अपने जीवन में अनुभव नहीं होती। कहीं न कहीं ऐसा लगता कि मैं जो कर रहा हूँ, उसका सीधा तारतम्य मेरे जीवन के साथ नहीं जुड़ पा रहा है। मन में कभी-कभी विचार आता कि जिसको मैं पूजता हूँ, याद करता हूँ और खोजता हूँ, क्या मेरी कभी उनसे मुलाकात भी होगी! क्या मैं कभी उनसे बात भी कर सकूंगा! क्या मैं अपने दिल की बात उनसे कर अपने जीवन में सुकून महसूस कर सकूंगा! मेरी दिली इच्छा है कि मेरे जीवन में सुख, शांति, प्रेम, आनंद और समृद्धि सदा प्रचुर मात्रा में बनी रहे। क्या ऐसा भी कभी समय आयेगा!

मैंने शास्त्रों एवं पुराणों में भी पढ़ा कि परमात्मा का अवतरण होता है, और वो परकाया प्रवेश कर फिर से भक्ति का फल देने इस सृष्टि पर आते हैं। भक्ति का फल ज्ञान, अर्थात् समझ देते हैं कि तुझे जीवन मिला ही है खुशियों से जीने के लिए।

अब वे न सिर्फ अपना परिचय देते हैं, बल्कि स्वयं हमारा भी सही परिचय हमें देते हैं। साथ ही साथ हमारा और उनके बीच का सम्बन्ध क्या है, ये भी बताते हैं। जैसे कि हमारा और उनका सम्बन्ध पिता और पुत्र का ही होगा ना! भक्ति में हम गाते ही रहते हैं, त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव... लेकिन सम्बन्ध की पहचान न होने के कारण उनसे हम रूबरू हो नहीं पाते थे। अब वो कहता है, तुम जाने-अनजाने मुझे याद भी करते थे और पूजते भी थे। अब मैं आया हूँ, अब मुझे तथा स्वयं को

परमपिता परमात्मा ज्ञान के सागर, सुख के सागर, शांति के सागर, सर्वशक्तिवान, प्रेम के सागर तथा खुशियों के भंडार हैं, तो भला उनका पुत्र, उनके बच्चे



कैसे अशांत हो सकते हैं, कैसे अपने पिता के प्यार से वंचित रह सकते हैं! कैसे निर्धन, बलहीन हो सकते हैं!

वास्तविक स्वरूप में जान और पहचान कर मुझे याद करो। तुम सिर्फ पूजते ही न रहो, बल्कि मैं तो तुम्हें पूजनीय बनाने आया हूँ। तुम

तो मास्टर हो ना! पिता ज्ञान के सागर, सुख के सागर, शांति के सागर, सर्वशक्तिवान, प्रेम के सागर तथा खुशियों का भंडार हैं, तो भला उनका पुत्र, उनके बच्चे कैसे अशांत हो सकते हैं, कैसे अपने पिता के प्यार से वंचित रह सकते हैं! कैसे निर्धन, बलहीन हो सकते हैं! अगर किसी धनवान व्यक्ति की तरह हम भी

धनवान बनने की इच्छा रखते हैं तो सिर्फ उसके नाम की माला जपने से तो नहीं बन जायेंगे ना! तो हमें भी उन जैसे कर्म करने होंगे, उन जैसे गुणों को अपने जीवन में अपनाना होगा। इसी तरह हमें भी अगर परमात्मा से मिलन मनाना है, तो न सिर्फ उन्हें पूजते ही रहना है, बल्कि उन जैसा पूज्य स्वरूप, देवत्व को अपने जीवन में धारण करना होगा। तभी हम उन जैसा और उनके लायक बन पायेंगे।

अवतरण का उल्लेख शास्त्रों और पुराणों में भी...

“हाँ, नव सृष्टि के निर्माण हेतु ‘मैं’ ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा”

वेदों-पुराणों में भी शिव अवतरण की बात कही गई है। शिव पुराण में लिखा है कि भगवान शिव ने कहा- मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा। इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। (ये वाक्य शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42 वें अध्याय में लिखा है) शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा सृष्टि रची। शिवपुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है। भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उनके द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की।

एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रकट हुआ जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में धर्म संहिता में लिखा है कि कलियुग के अन्त में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जोकि कालाग्नि के समान ज्वालमान था। वह न घटता था

और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ। इस तरह हम देखते हैं कि भारत के सभी वेद-ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। कहीं उसकी व्याख्या अण्डाकार ज्योति के रूप

से मंगल मिलन मनाने का। अभी नहीं तो कभी नहीं। ऐसा न हो परमात्मा आकर के अपना कार्य कर जाएं और हम देखते ही रह जाएं। समय निकल जाने पर हमारे पास पछतावे के अलावा और कुछ हाथ नहीं रह जाता है।



में, तो कहीं सूर्य से भी प्रकाशमान ज्योति के रूप में की गई है।

परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनो

हे मनुष्य आत्माओं! अब समय आ चुका है विषय-विकारों से मुक्त होकर परमपिता परमात्मा

यदि हमें अपने भाग्य को जगाना है और नई सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना के इस कार्य में सहयोगी बनना है, तो परमात्मा शिव के इस महान कार्य में सहयोगी बनना है। परमात्मा शिव के इस महान कार्य में अपना तन-मन-धन सफल कर 21 जन्मों की बादशाही के मालिक

बनने का सुअवसर हमारे सामने है।

ज्योति ने प्रकट होकर किया नवयुग का निर्माण

महाभारत में भी लिखा है कि जब यह सृष्टि तमोगुण और अन्धकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।

जेहोवा शिव का ही पर्यायवाची

देखा जाए तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रंथों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक तोरेत का आरम्भ भी ऐसे ही होता है। सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने ही आदम एवं हव्वा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा। भगवान का नाम जेहोवा मानते हैं जो परमात्मा शिव का ही पर्यायवाची है।

शास्त्रों में वर्णित महाकुंभ का साक्षात् दर्शन यहाँ...

कहा जाता है कि अगर हमको शांति की स्थापना करनी हो तो हमको शांति धारण करनी पड़ती है। शांति के सागर परमात्मा शिव निराकार के साथ असंख्य मास्टर शांति के सागर आत्मायें निरन्तर उन्हीं प्रकंपनों को पूरे विश्व में एक साथ, एक समय पर फैला रहे हैं। परमात्मा का ये पावन धाम माउण्ट आबू जहाँ पर साक्षात् उस महाकुंभ को हम अनुभव कर सकते हैं जिसका वर्णन शास्त्रों में है और उसकी नींव 1936 में पड़ चुकी है, अब जल्द ही होगी वो स्वर्णिम दुनिया साकार। आप दर्शन नहीं करना चाहेंगे!

एक मान्यता प्रचलित है कि जब किसी चीज़ का विरोध होता है तभी परिवर्तन होता है। परंतु आज के समय में वो परिवर्तन सर्वमान्य व स्थायी नहीं माना जाता, क्योंकि उसे सहज भाव से लोगों ने स्वीकारा नहीं

ने इसका बीड़ा उठाया है। सुनकर आपको आश्चर्य जरूर लग रहा होगा, लेकिन ये बात सम्पूर्ण रूप से सत्य है। अरावली की श्रृंखला में बसा एक पवित्र स्थान माउण्ट आबू, महापरिवर्तन के लिए एक अनुपम

स्तर पर कर रहे हैं। यह परिवर्तन स्वैच्छिक है अर्थात् यहां कोई दबाव जबरदस्ती नहीं है। परमात्मा सबसे पहले सभी आत्माओं को उसके स्वयं का परिचय देते कि तुम एक सुंदर, शक्तिशाली, अविनाशी आत्मा

लें कि 'मैं' एक अविनाशी शांत आत्मा हूँ और मेरे अंदर मेरे अविनाशी सातों गुण मौजूद हैं, मैं सतोगुणी हूँ' बस यही हमें स्वर्णिम संसार की तरफ रुख करने में मदद करेगा।

यह कार्य करीब 9 दशकों से निरंतर जारी है। यहां पर देश-विदेश के बहुत सारे कर्णधारों ने परिवर्तन कर स्वर्णिम दुनिया में आने हेतु अपना पंजीकरण करा लिया है। महापरिवर्तन की इस पावन वेला में परमात्मा शिव आप सबका भी आह्वान कर रहे हैं। आओ मेरे लाडले बच्चों, मैं आपके लिए ही तो इस धरा, कलियुगी संसार को सतयुगी संसार बनाने के लिए अवतरित हुआ हूँ। पूरे विश्व के 140 देशों में लगभग 8000 सेवाकेन्द्र, उसमें पच्चीस हजार से भी अधिक समर्पित भाई एवं बहनें अपनी सेवाएं जनहित के कार्य के लिए दे रहे हैं। एक चरणबद्ध तरीके से परिवर्तन हेतु निरंतर राजयोग का अभ्यास और उससे सम्बंधित बातें सीखने से हम अपने जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर सकते हैं। तो आओ इस दिशा में अपना पहला कदम तो बढ़ायें...!



होता है। मदर टेरेसा भी उन रैलियों में नहीं जाती थीं जहाँ विरोध होता था। उनका कहना था कि यदि आप शांति स्थापन करना चाहते हैं तो उसे शांति से करें न कि विरोध से। इसी श्रृंखला में भारत भूमि पर बड़े सहज व शान्तिमय तरीके से महापरिवर्तन आरंभ हो चुका है। स्वयं परमात्मा

उदाहरण बन चुका है। यहां पर स्वयं संकट हर्ता, सुख दाता, सर्व आत्माओं के पिता परमपिता शिव परमात्मा निराकार ज्योतिर्बिन्दु अपने साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो, ब्रह्मा वत्सों ब्रह्माकुमार व ब्रह्माकुमारियों के द्वारा महापरिवर्तन का कार्य युद्ध

हो। परन्तु बहुत काल से इस अज्ञानता के कारण अपने आप को शरीर समझते हो लेकिन इसके कारण ही दुःख व अशांति का माहौल बना हुआ है। बस यही एक परिवर्तन है जो हमें उस स्वर्णिम संसार की तरफ ले जाएगा। जब सभी इस महापरिवर्तन में ये समझ

कुछ इनके भी नजरिये परमात्मा के बारे में...



संस्थान सकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र

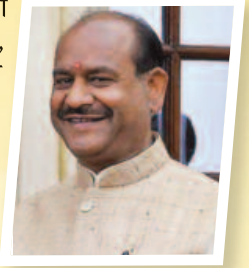
ब्रह्माकुमारी संस्थान में जाने पर शक्ति मिलती है, ताकत मिलती है। यहां आने पर पॉवरफुल वायब्रेशन्स मिलते हैं। जीवन में सकारात्मक

ऊर्जा का संचार होता है।

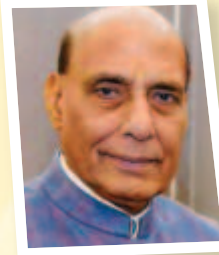
ये ब्रह्माकुमारी बहनें साक्षात् ज्ञान गंगाएं हैं। जिनके सानिध्य में आने पर कोई भी अपने आप को हल्का व शक्तिशाली महसूस करता है। उनके पवित्र और सादगी भरे जीवन से सभी को प्रेरणा मिलती है। जैसे सूर्य चमकता है और अपनी रोशनी से चारों ओर प्रकाश बिखेरता है, वैसे ही ये बहनें अपने ज्ञान का प्रकाश बिखेरकर हमारे जीवन में नई रोशनी जगाती हैं। ये बहनें, भगवान के बच्चे पूरे विश्व को ज्ञान की रोशनी दे रहे हैं। - भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

भारत को विश्व गुरु बनाने में संस्थान की अहम भूमिका

आज के परिदृश्य में भारत ही है जो सम्पूर्ण विश्व में शांति, सद्भाव व समृद्धि का संदेश दे रहा है। सदियों से भारत विश्व में अध्यात्म की गंगा बहा रहा है। भारत विश्वगुरु था और फिर से बनने जा रहा है। इसमें ब्रह्माकुमारी संस्थान की अहम भूमिका रहेगी। क्योंकि ये संस्थान न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में अध्यात्म की अलख जगा रहा है। - लोकसभा स्पीकर ओम बिरला, भारत



परमात्म कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण इस संस्थान में



यहां आते ही मेरा अनुभव ये रहा कि मुझे एक सशक्त आध्यात्मिक फीलिंग हुई। यहां का प्रकम्पन मुझे शांति प्रदान कर रहा था। जीवन में बड़ा काम करने के लिए बड़ा दिल होना जरूरी है। छोटे दिल का व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता। और

जिसका दिल जितना बड़ा होगा, वह उतना ही आध्यात्मिक होगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान में दिल व मन को बड़ा करने की शिक्षा दी जाती है। इसी कारण इन्होंने आज विश्व के 140 देशों में भारत की आध्यात्मिकता को पहुंचाया है। मैं ये मानता हूँ कि जो काम सरकार नहीं कर सकती, वो ये ब्रह्माकुमारी संस्थान बखूबी कर रहा है। - भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह

विश्व परिवर्तन का माध्यम बन रही 'ब्रह्माकुमारी'

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉजिटिव संकल्पों की रचना होने लगी। मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ सारहीन है। इस ज्ञान के द्वारा जो हमें एकाग्रता की शक्ति मिली है उसके द्वारा हमें दो पार्टियों के बीच मतभेद को सॉल्व करने में बहुत मदद मिलती थी। इस दुनिया का परिवर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है। - बी.डी. राठी, पूर्व हाई कोर्ट जज, ग्वालियर



परमात्मा को जानें इस तरह...

जैसे एक जौहरी के पास परखने की कसौटी होती है जिस पर वो कसकर देखता है कि ये सोना कितने कैरेट का है। उसी प्रकार हम भी अपनी मान्यताओं को कसौटी पर कस करके तो देखें क्योंकि कल अगर सचमुच मेरे सामने भगवान आ भी जायें तो क्या उनको हम पहचान पायेंगे! यह कसौटी निम्न पाँच बातों पर निर्भर करती है...

1 सबसे पहली बात कि जो सर्वधर्म मान्य हो

जिसको सभी धर्मवाले परमात्मा के रूप में स्वीकार करें उसको ही हम सत्य कहेंगे। ऐसा नहीं कि हिन्दुओं का भगवान अलग है, मुसलमानों व क्रिश्चियनों का भगवान अलग है, नहीं। भगवान एक ही है, और वो सर्व का पिता है। दस बातें हमारे सामने हों और हम कहें कि दसों ही सत्य हैं, ऐसा नहीं हो सकता। यदि दो बातें भी हमारे सामने हों तो भी हम कहते हैं- यह सच है, यह झूठ है। तो परमात्मा के विषय में भी सत्य एक ही होना चाहिए, चाहे नाम भिन्न-भिन्न हों।

2 जो सर्वोच्च हो, जिसके ऊपर कोई न हो

जो सर्व का माता-पिता, बंधु, सखा, गुरु, शिक्षक व रक्षक हो। जिसका कोई माता-पिता न हो,



जिसका कोई गुरु न हो, जिसका कोई शिक्षक न हो, जिसकी रक्षा करने वाला कोई न हो, उसको कहेंगे परमात्मा।

3 जो सर्व से परे हो

तभी तो परमात्मा को अजन्मा कहा जाता है। अजन्मा के साथ-साथ उसने गीता में यह भी कहा है कि मैं कालों का भी काल अर्थात्

महाकाल हूँ। मुझे काल कभी खा नहीं सकता। जिसका जन्म होता है उसे कर्म भी करना पड़ता है और उसको कर्म का फल भी भोगना पड़ता है। जो कर्म और कर्मफल के चक्र में आ जाता है उसे हम परमात्मा नहीं कहेंगे, क्योंकि उसने स्वयं कहा है कि मैं अकर्ता तथा अभोक्ता हूँ, न करता हूँ न भोगता हूँ।

4 जो परे होते हुए भी सब कुछ जानता हो अर्थात् सर्वज्ञ हो

इसी कारण से परमात्मा को 'त्रिकालदर्शी' कहा जाता है। जिसके पास तीनों कालों व तीनों लोकों का ज्ञान हो, जो त्रिनेत्री है तथा जो मनुष्यों को भी ज्ञान का दिव्यचक्षु प्रदान करने वाले हैं, उसे हम 'परमात्मा' कहेंगे।

5 जो सर्व गुणों में अनंत हो

जिसकी महिमा के लिए कहा हुआ है कि यदि धरती को कागज बना दो, सागर को स्याही बना दो, जंगल को कलम बना दो, और स्वयं सरस्वती बैठकर परमात्मा की महिमा लिखे तो भी उसकी महिमा लिखी नहीं जा सकती है।

तो यह है परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को परखने की कसौटी। जिस कसौटी पर हमें अपनी मान्यताओं को भी कस कर देखना है कि क्या वह सत्य है!

एक ही सत्ता के साथ सर्व धर्म एकमत

परमात्मा के स्वरूप को लेकर सभी एकमत ही रहे हैं। लेकिन उसके स्वरूप को बताने का तरीका सबका अलग-अलग रहा। जितनी भी महान आत्माएं, पीर, पैगम्बरों ने परमात्मा के स्वरूप को बताया, उसमें कहीं न कहीं निराकार का भाव अवश्य छुपा हुआ था। इसमें मुख्य बात हमें ये समझनी है कि परमात्मा कोई देहधारी मनुष्य हो नहीं सकता, वो होगा तो देहातीत ही। उसके स्वरूप का वर्णन प्रमुख पैगम्बरों ने जो किया, वो निम्नवत है...

ईसा के भाव में 'दिव्य ज्योति रूप'
ईसा मसीह (जिसस क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा कि 'गॉड इज लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड'। जिसस ने कभी ये नहीं कहा कि 'आई एम गॉड', उसने परमात्मा को लाइट के स्वरूप में ही बताया।

ज्योति 'जेहोवा' का हुआ साक्षात्कार
ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा 'जेहोवा'। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं, का प्रतीक है।

सिक्ख धर्म ने माना निराकार को
इसी प्रकार सिक्खों के धर्म स्थापक गुरु नानक जी ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है। जबकि ज्योति स्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मंदिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरु गोविंद सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं, बल्कि विश्व के पूज्य हैं।

'होली फायर' में भी निराकार
पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि



पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है, तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं।

रहस्य गिरजाघर का
रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की

प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

श्रीकृष्ण के भी पूज्य निराकार शिव
महाभारत युद्ध के पहले विजय हेतु कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी

थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता निराकार शिव की पूजा-अर्चना की, तथा साथ-साथ श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई व युद्ध में कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की।

'संग-ए-असवद' के रूप में माना
मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी शिवलिंग के आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे

'संग-ए-असवद' कहते हैं। ये भी एक जानने का विषय है कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है। उसको वे लोग 'नूर-ए-इलाही' भी कहते हैं।

जापान, चीन, बेबीलोन में भी निराकार का समर्थक

जापान में शिवोनिज़्म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊँचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' भी कहते हैं। उसका नाम दिया है 'चिंकोनसेकी' जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी में देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं।

श्रीराम ने भी पूजा शिव को

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्यों आवश्यकता होती? ये भी कहा जाता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले परमात्मा शिव का स्मरण अति आवश्यक है, ऐसा ही श्रीराम ने भी किया।

शंकर के भी परमपिता 'शिव'

कुछ लोग 'शिव' और 'शंकर' में अंतर नहीं समझते। वे कहते हैं कि शिव और शंकर एक ही इष्ट के दो नाम हैं। अब प्रश्न उठता है कि 'शिवलिंग' नामक प्रतिमा और 'शंकर' की देवाकार मूर्ति, ये दो अलग, भिन्न-भिन्न रूप वाले स्मरण चिन्ह क्यों हैं? किसी व्यक्ति के पिता को उसके मित्र 'गुप्ता जी' अथवा 'रमेश चन्द्र जी' और उसके माता-पिता 'रम्मू' अथवा 'मेशी' कहकर पुकारते हों, यह तो हो सकता है परंतु उस व्यक्ति का छायाचित्र अथवा कलाकार द्वारा बनाई उसकी प्रतिमूर्ति एक ही रूप की होगी न? बाल रूप की और वृद्ध रूप की दो अलग रूप वाली फोटो भी हो सकती हैं जिनमें काफी अंतर दिखाई देता हो परंतु दोनों सशरीर, सकाय अर्थात् पिण्ड धारण किये हुए तो होंगे न? परंतु शिव पिण्ड तो अण्डाकार ही होती है और शंकर की मूर्ति अंग-



प्रत्यंग सहित ही सदा स्थापित और पूजित होती है, यहां अगर उस देवाकार मूर्ति का

कोई अंग थोड़ा भी खण्डित हो जाए तो उस अंग-भंग मूर्ति को पूजा के योग्य ही

नहीं माना जाता। फिर शिव की मण्डलाकार प्रतिमा को तो 'ज्योतिर्लिंगम्' ही माना

जाता है जबकि शंकर जी को यह संज्ञा नहीं दी जाती। अन्यथा, शंकर जी को तो समाधिस्थ ही प्रायः दिखाया जाता है जो इस बात का प्रतीक है कि वे स्वयं किसी ध्येय के ध्यान में मन को समाहित किये हुए हैं जबकि शिव पिण्ड में कोई ऐसा भाव प्रदर्शित न होने से वह स्वयं ही परम-स्मरणीय है। अतः दोनों का अंतर प्रत्यक्ष ही है। फिर भी इसको एक ओर रख कर कुछ लोग शिवलिंग को पृष्ठ-भूमिका में देकर उस पर शंकर की मुखाकृति अंकित कर देते हैं और अन्य कई चित्रकार शंकर जी से ज्योतिर्लिंग को प्रकट होता हुआ दिखा देते हैं और पुराणों में तो ऐसी भी कथायें अंकित हैं कि 'शिव' 'शंकर' जी का ही एक शरीर-भाग है। सचमुच, यह तो मनुष्य की अज्ञानता की पराकाष्ठा ही है कि वे एक ओर खण्डित काया वाले देव

की पूजा नहीं करते और दूसरी ओर वे किसी एक ही शरीर-भाग की पूजा की बात कहते हैं। स्पष्ट रूप से यह बात विवेक-विरुद्ध है।

हमेशा ही 'शिवरात्रि' शब्द का उच्चारण किया जाता है, 'शंकररात्रि' तो कभी भी किसी ने नहीं कहा होगा। उन्हें सदा शिव कहते हैं। इसीलिए सत्यम् शिवम् सुंदरम् कहा जाता है, सत्यम् शंकरम् सुंदरम् नहीं कहते हैं। उसी तरह 'त्रिमूर्ति शिव' कहते हैं, 'त्रिमूर्ति शंकर' नहीं। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के रचयिता शिव हैं इसलिए उन्हें ही त्रिमूर्ति कहा गया है।

अगर शिव-शंकर एक हैं तो हम ऐसा क्यों नहीं कहते...

उसी तरह शंकर देव, आदि देव, महादेव कहा जाता है जबकि शिव परमात्माय नमः कहते हैं, अर्थात् शंकर देवता हैं जबकि शिव परमात्मा। ॐ नमः शिवाय कहते हैं, ॐ शंकराय कभी नहीं कहते, क्योंकि सभी सर्वोच्च सत्ता, सर्व आत्माओं और त्रिदेव के भी पिता परमात्मा शिव को

प्रणाम करते हैं। इसी प्रकार हम देखें तो 'शिव' का अर्थ कल्याणकारी होता है, जबकि 'शंकर' विनाश के देवता हैं, यही उनका कर्तव्य है। जबकि परमात्मा शिव अपने त्रिदेवों द्वारा स्थापना, पालना और विनाश का कार्य करवाते हैं। अतः ये सभी तर्क इस बात को सिद्ध करते हैं कि

परमात्मा शिव अलग हैं महादेव शंकर अलग। इस रहस्य को स्पष्ट करने का ध्येय यही है कि परमात्मा एक हैं, निराकार हैं, वो हम सर्व आत्माओं के पिता हैं, किसी एक धर्म के नहीं। और हम अपने असली पिता को पहचान उनके साथ अपने सम्बंध जोड़कर, उनसे वो सारे अधिकार और सच्चा वसा प्राप्त कर सकें जिसके हम सभी बच्चे अधिकारी हैं।

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

Peace of Mind CABLE Network

hathway, DEN, GTPL, FASTWAY, TATA, 1065, 678, 1221, 1087, 1084, 1060, 578

जागरण, उपवास, विषैले फूल चढ़ाना और भांग पीना.... इनका शिवरात्रि से क्या है सम्बंध?

हम परमात्मा को तलाशेंगे कैसे? कौन हमें उनसे मिलवायेगा? ये प्रश्न हमारे मन में हमेशा उठता रहता है पर आज हम उस पर थोड़ा सा विचार करेंगे। अगर हम आपके परिवार के उन सदस्यों को यहाँ पर बुलाते हैं, जो आपको बहुत अच्छी तरह से जानते हैं और आपको कहें कि आपका परिचय दें। वे सब एक ही व्यक्ति के बारे में बतायेंगे, लेकिन एक जैसा नहीं बतायेंगे। जो सबसे ज़्यादा करीब हैं, जो आपको बहुत ही अच्छी तरह से जानते हैं, वे भी आपका परिचय एक तरह से नहीं देंगे। उनका अपने रिश्ते के अनुसार परिचय बदलता जायेगा। वे सभी आपके बारे में एक जैसा नहीं सुनायेंगे लेकिन उनमें से कोई भी गलत नहीं होगा। क्योंकि फर्क आ रहा है, तो इसका मतलब कोई भी 100 प्रतिशत सही नहीं होगा। इसलिए सबके विचारों में अंतर होगा। आपका यथार्थ परिचय कि आप असल में कौन हैं? क्या महसूस करते हैं? क्या सोचते हैं? आप सारा दिन क्या करते हैं? आपका सही परिचय कौन देगा? आप खुद देंगे ना! वो सब आपके इतने करीब हैं लेकिन वे यथार्थ परिचय नहीं दे पा रहे हैं। कोई गलत नहीं होगा,लेकिन कोई भी 100 प्रतिशत सही भी नहीं होगा। जब तक आप अपना 100 प्रतिशत सही परिचय खुद नहीं देंगे तब तक स्पष्ट नहीं होगा। हजारों वर्षों से धर्मात्माओं ने, महात्माओं ने, संत आत्माओं ने, अलग-अलग लोगों ने आकर हमें उस परमात्मा का परिचय दिया है। हरेक ने उसे जिस दृष्टि से देखा, जिस सम्बन्ध से उसको पहचाना और जिस सम्बन्ध से उसको जाना उसी अनुसार उसका परिचय दिया। अलग-अलग किसी की बात नहीं कर रहे थे, वे सब एक ही शक्ति का परिचय दे रहे थे। उनमें से कोई भी गलत नहीं था जिन्होंने भी परमात्मा का परिचय दिया, लेकिन फिर



ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

भी सबके परिचय में थोड़ा-थोड़ा अन्तर आ गया, इसका मतलब कोई भी 100 प्रतिशत सही नहीं था। उन्होंने जिस दृष्टिकोण से देखा वैसा परिचय दिया। तो अब परमात्मा का सही 100 प्रतिशत यथार्थ परिचय कौन देगा? परमात्मा खुद देंगे। अगर आपको परमात्मा का सही परिचय चाहिए तो वो

अपने आप से पूछना होगा कि जो सर्वशक्तिवान है, जो ऑलमाइटी अथॉरिटी है, जो शांति का सागर है, जो प्रेम का सागर है, पवित्रता का सागर है वो मेरे अंदर बैठा है?

आपको तभी मिलेगा जब वो खुद आकर अपना परिचय देगा। अगर हम में से कोई भी उसका परिचय देते हैं तो फिर भी थोड़ा-सा अंतर आयेगा। परमात्मा जब स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं तो वो परिचय बड़ा सरल होगा। हमने तो परमात्मा का परिचय बड़ा जटिल कर दिया था क्योंकि हम

सत्य नहीं जानते हैं। लेकिन इस सारे सृष्टि चक्र में एक ऐसा समय आता है जब परमात्मा स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं और वो परिचय बहुत आसान और 100 प्रतिशत यथार्थ होता है। और जब आप 100 प्रतिशत यथार्थ रूप से किसी को जान लेते हैं, फिर उसके साथ रिश्ता जोड़ना बहुत सरल हो जाता है। भगवान रचयिता है और प्रकृति उसकी रचना है फिर उसकी रचना को ही रचयिता हम कैसे मान सकते हैं? जैसे एक कुम्हार है बहुत सुंदर-सा मटका बनाता है, उस मटके को देखकर हमें उसकी याद आ सकती है,लेकिन वो परमात्मा नहीं है। फिर हम कहते हैं आत्मा सो परमात्मा मतलब आत्मा ही परमात्मा है। एक तरफ हम कहते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे और फिर दूसरी तरफ कहते हैं आत्मा ही परमात्मा है। बच्चा पिता के जैसा हो सकता है,लेकिन बच्चा ही पिता बन जाये, वो संभव नहीं है। वो किसी और रचना का पिता बन सकता,लेकिन वो अपना ही पिता नहीं बन सकता। उसका पिता उसका अपना ही रहेगा। फिर कहते हैं कि परमात्मा के ही अंश हैं हम और परमात्मा में ही समा जायेंगे या हम कहते हैं कि कण-कण में परमात्मा है। अधिकतर लोग आजतक ये मानते हैं कि हरेक के अंदर परमात्मा है और उसके पीछे भी कुछ भाव रहा होगा। लेकिन हमें अपने आप से पूछना होगा कि जो सर्वशक्तिवान है, जो ऑलमाइटी अथॉरिटी है, जो शांति का सागर है, जो प्रेम का सागर है, पवित्रता का सागर है वो मेरे अंदर बैठा है? अगर वो मेरे अंदर बैठा है तो मेरा मनोभाव क्या होना चाहिए? अगर शांति का सागर आपके अंदर बैठा है तो क्या क्रोध आ सकता है, दुःख आ सकता है, चिंता हो सकती है, जो दृष्टिकोण आज हमारा है उसका अंश भी नहीं हो सकता।



उज्जैन-म.प्र.। ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर मंदिर के विस्तारीकरण में महाकाल लोक के नवनिर्माण कार्यक्रम में आमंत्रित इंदौर जोन की प्रशासनिक निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, उज्जैन क्षेत्र की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु.उषा दीदी, ब्र.कु.अनीता दीदी,इंदौर, ब्र.कु. उषा दीदी,इंदौर तथा ब्र.कु.मंजू दीदी,उज्जैन को मध्य प्रदेश पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, विशिष्ट साधु-संत व महामण्डलेश्वर आदि उपस्थित रहे।



तलेन-म.प्र.। दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण के अंतर्गत 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में विधायक गिरीश भंडारी, पूर्व विधायक मनमोहन सिंह शर्मा, नगर परिषद अध्यक्ष नारायण सिंह यादव, पूर्व बैंक मैनेजर अरविन्द सक्सेना तथा वरिष्ठ पत्रकार बंधुओं सहित संस्थान की जिला प्रभारी ब्र.कु.मधु बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.लक्ष्मी बहन एवं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



करीम नगर-तेलंगाना। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत डीएम एंड एचओ ऑफिस में कोरोना वॉरियर डॉक्टर्स, नर्सों और हॉस्पिटल स्टाफ को मेडल और सर्टिफिकेट से सम्मानित करते हुए ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सचिव ब्र.कु.डॉ. बनारसी लाल शाह तथा ब्र.कु.विजया बहन।



अलीराजपुर-म.प्र.। डॉ.अल्पना,प्रिंसिपल,शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु.नारायण भाई व ब्र.कु.ज्योति बहन। साथ हैं प्रो.मीना,विश्व बैंक परियोजना अधिकारी।



कामारेड्डी-तेलंगाना। स्थानीय सेवाकेन्द्र पर कोरोना वॉरियर डॉक्टर्स, नर्सों एवं हॉस्पिटल स्टाफ को मेडल और सर्टिफिकेट से सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.जया बहन व अन्य।



सिरसिला-तेलंगाना। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत गवर्नमेंट मेडिकल डिपार्टमेंट,सिरसिला में कोरोना वॉरियर डॉक्टर्स, नर्सों और हॉस्पिटल स्टाफ को मेडल और सर्टिफिकेट से सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.उमा बहन तथा अन्य।

नये साल की कर लें प्लानिंग

- ब्र.कु. उर्वशी बहन,नई दिल्ली

ये साल तो बीते सालों की तरह गुज़रने ही वाला है परंतु आने वाले साल का क्या सोचा है आपने? क्या करेंगे आप इस साल? क्या आप अच्छा-अच्छा खायेंगे, पहनेंगे और घूमने जायेंगे? हाँ,ये सब तो ठीक है लेकिन खाने, घूमने के अलावा और क्या करेंगे आप? क्योंकि बाबा के बच्चों का कोई भी दिन, त्योहार और नया साल यहीं तक सीमित नहीं होता है ना! बाबा के बच्चों का हर दिन एक नई क्रांति से शुरू होता है, तपस्या से शुरू होता है, धारणा से शुरू होता है और पोतामेल के बाद योग निद्रा पर खत्म होता है। फिर क्या-क्या नया करने वाले हैं आप इस साल? क्या आपने कुछ सोचा है? अब आप कहेंगे कि हमारी तो मंजिल है ही कर्मातीत अवस्था को पाने की तो इस बार भी हम यही लक्ष्य रखकर आगे बढ़ेंगे, नए साल की शुरुआत करेंगे। ये तो बहुत खुशी की बात है कि आपको आपका लक्ष्य पूर्ण रीति स्पष्ट है परंतु क्या-क्या विधियाँ अपनाएँगे आप उसको प्राप्त करने के लिए, क्या ये भी स्पष्ट है आपको? कर्मातीत अवस्था तो है हमारी मंजिल, परंतु उस मंजिल तक पहुँचने का रास्ता क्या है हमारा? जैसे मधुबन आने के लिए आपको पता होता है कि आप किस रास्ते से गुज़रेंगे और रेलगाड़ी, बस, हवाई जहाज किसके माध्यम से आयेंगे,ठीक ऐसे ही हमें ये भी ज्ञान होना चाहिए कि कर्मातीत अवस्था तक जाने के लिए क्या, कब और कैसा पुरुषार्थ करना है, कब अपनी चेकिंग करनी है। फिर अगर कोई कमी निकलती है तो किस गुण व शक्ति से उसको भरना है, कौन-सा ज्ञान का प्वाइंट वहाँ रखना है। क्रोध को शांति की शक्ति से खत्म करना है या प्रेम की शक्ति से, नफरत को प्रेम की शक्ति से खत्म करेंगे या धैर्यता से? ये सभी बातें जब हमें स्पष्ट होंगी तभी हम आगे बढ़ सकते हैं।

इस साल की अगर आपने अपनी योजना बना

ली है तो बहुत अच्छा और अगर नहीं भी बनाई है तो कोई हर्जा नहीं अब कर लीजिए। मेरा अनुभव ये कहता है कि हमारे छोटे-छोटे कदम ही हमें हमारी मंजिल तक ले जाते हैं। जैसे सीधे 4 घंटे के योग की योजना न बनाएं बल्कि आप 2 घंटे के योग की योजना बनाएं। अगर आपका योग अभी सिर्फ 1 घंटा या उससे कम है तो आप सीधे निर्विकारी बनने की ना सोचें। इस आने वाले साल में बल्कि आप अपने 1-1 विकार पर काम करेंगे। हम उदाहरण से आपको पूरा स्पष्ट करते हैं, आप स्वयं की चेकिंग करें किस समय और किस बात को लेकर आपमें कौन-सा विकार इमर्ज होता है।



जैसे संगठन में जाने से आपको अहंकार आता है, क्रोध आता है, आप कमजोर महसूस करते हो तो क्या किसी के देह की सुंदरता को देखकर आप स्वयं के लिए बुरा महसूस करते हो? क्या अपने कपड़े, धन, सुंदरता, ज्ञान पद को लेकर कमजोर या अहंकारी हो जाते हो? इस रीति से स्वयं की चेकिंग करो आप। कब, कौन-सी और किस विधि से माया मुझ आत्मा पर अटैक करती है? क्योंकि जब तक हम स्वयं को चेक नहीं करेंगे तब तक हम स्वयं को चेंज भी नहीं कर सकेंगे। जितना-जितना चेक करेंगे उतना-उतना चेंज होंगे ये तो अव्यक्त बापदादा के महावाक्य हैं। नो चेक, नो चेंज। इसलिए अब आप अपनी यही चेकिंग कीजिए कि कब और किस परिस्थिति में कौन-सा

विकार मुझे हिट करता है, जब आप ये कर लेंगे तो यकीन मानिए आप जल्दी ही स्वयं को परिवर्तित भी कर लेंगे। क्योंकि कई बार हम योग में इमर्ज कर रहे होते हैं सहन करने की शक्ति परंतु वास्तव में चाहिए होती है हमें समाने की शक्ति। कहते भी हैं ना कि "जांच सही तो इलाज सही"। ये वाक्य बिल्कुल सटीक बैठता है हम ब्राह्मणों के ऊपर भी, हमारे विकार रूपी बीमारी के लिए भी। अब आप प्रतिदिन कुछ घंटे अकेले में बैठ स्वयं की चेकिंग कीजिए कि क्या-क्या बदलाव आपको लाने हैं स्वयं में,और-और कैसे उन बदलावों को ला सकते हैं। आपको स्वयं ही रास्ता मिलेगा और नहीं तो आप मुरली से मदद लीजिए, बाबा से शक्ति लीजिए, बाबा किसी न किसी रीति से आपको टच करा ही देंगे। यकीन मानिए आप इन छोटी-छोटी परिस्थितियों में जब स्वयं की चेकिंग करेंगे ना तो आप बहुत ही जल्द स्वयं में बहुत परिवर्तन पायेंगे,ये मेरा खुद का अनुभव है। वास्तव में जो विकार हमें छोटे लगते हैं ना, वो असल में छोटे होते नहीं हैं। जैसे ये लोभ, मोह को जो हम काम विकार से छोटा समझते हैं परंतु हकीकत में इनकी तार बहुत सूक्ष्म और गहरी होती है। एक फिल्म की लाइन है "जो दिखता है वो होता नहीं और जो होता है वो दिखता नहीं"। ये लाइन बिल्कुल सत्य है क्योंकि हमारी जिंदगी भी तो एक फिल्म की तरह ही है ना और इस सृष्टि नाटक में भी जो हमें आसान दिखता है व छोटा दिखता है वो हकीकत में छोटा होता नहीं है, लेकिन इसका अर्थ ये भी नहीं है कि हम उसमें कभी कुछ परिवर्तन कर सकें या उसको खत्म न कर सकें ऐसा कुछ भी नहीं है। इसलिए अब जब हम सभी को अपना लक्ष्य स्पष्ट हो ही गया तो क्यों न हम स्वयं में वो सभी लक्षण भी धारण कर लें जो उसकी (लक्ष्य) प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं।

पर्व या त्योहार के पीछे का कोई न कोई इतिहास जरूर होता है। और कहते हैं इतिहास दोहराता है। जितने भी भारत के विशेष पर्व हैं उसमें भी एक पर्व महाशिवरात्रि का आता है। उस पर्व की गरिमा किसी से छुपी नहीं है। लेकिन उसकी महत्ता उन पर्वों से थोड़ी-सी कम हो जाती है। जिसको हम विशेष रूप से बहुत ज़्यादा याद रखते हैं जैसे दशहरा, दीपावली, होली, या और जो पर्व हैं उनके बारे में तो हम बहुत अच्छी तरह से जानकारी रखते भी हैं और देते भी हैं लोगों को। लेकिन महाशिवरात्रि पर्व ऐसा पर्व है जिस पर न कोई ऐसा स्पेशल, न कोई छुट्टी होती है और न ही कोई इस ओकेजन(अवसर) को ज़्यादा महत्व देते हैं। देते हैं लेकिन और पर्वों के मुकाबले बहुत कम। कारण उसका क्या है क्योंकि हम और पर्वों को साकार रूप से, आराम से एक-एक चीज़ को देखते हुए उनके बारे में कथाओं में, पुराणों में, और-और चीज़ों में पढ़कर या किसी से सुनकर बहुत सारी बातें जान गये। जोकि साकार रूप में इस दुनिया में दिखाया जाता है कि रामचन्द्र जी ने ऐसा किया, कृष्ण ने ऐसा किया, तो उस आधार से हम उन त्योहारों के साथ न्याय करते हैं, लेकिन महाशिवरात्रि का पर्व एक निराकार परमपिता परमात्मा के अवतरण का पर्व है। क्योंकि वो ज्योतिबिन्दु स्वरूप है, निराकार है, देह रहित है तो उस बात को समझने के लिए हमें थोड़ा समय लग रहा है। इसलिए इस पर्व को हम थोड़ा-सा

आसान तरीके से ले लेते हैं, सहज तरीके से ले लेते हैं लेकिन हम फोकस नहीं कर पाते। सारे त्योहारों और पर्वों का सार महाशिवरात्रि पर्व से ही शुरू होता है। क्योंकि निराकार परमात्मा शिव का

होगा। कहते हैं जो जैसा होता है दूसरे को वैसा देखता है। वैसे ही परमात्मा ज्योतिबिन्दु स्वरूप हैं तो वो हम सबको भी वैसा ही देखकर प्यार करते हैं। जब उसके बारे में कम बातें हुई हैं,

पर्वों का भाव

यादगार इस दुनिया में, इस भारत वर्ष में, चाहे दुनिया में ज्योतिबिन्दु परमात्मा को दिखाने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। और अन्य स्थानों पर कुछ ऐसा चिन्ह दर्शा दिया गया। जैसे अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया या बेबिलोन हर जगह कुछ न कुछ परमात्मा का सिम्बल(प्रतीक) बनाया गया। लेकिन वो शरीर वाला नहीं है, शरीर के बिना है, देह रहित है। तो परमात्मा को इन पाँच तत्वों से परे वाली जो स्थिति है उसके आधार से जाना है। इस समय उसको इतना महत्व हम क्यों नहीं दे पा रहे हैं, क्योंकि हमको उस निराकार को समझने के लिए पाँच तत्वों की देह से अपने आपको परे ले जाना

परमात्मा को इन पाँच तत्वों से परे वाली जो स्थिति है उसके आधार से जाना है। इस समय उसको इतना महत्व हम क्यों नहीं दे पा रहे हैं, क्योंकि हमको उस निराकार को समझने के लिए पाँच तत्वों की देह से अपने आपको परे ले जाना होगा।

कम बातें लोग जानते हैं तो लोग जैसे भी मूर्ति देखी, जैसे भी मूर्तिकार को मूर्ति बनाते हुए देखा, वैसा मान लिया कि भगवान का स्वरूप ऐसा ही है। अब हनुमान जैसा भगवान इस दुनिया में अगर है तो हनुमान जैसा बच्चा पैदा हो जाये तो वो तो स्वीकार नहीं होगा, लेकिन मूर्ति के सामने हम जाके मान के आ जाते हैं कि भगवान ऐसा है। तो पूरी तरह से तो नहीं स्वीकारा ना! नहीं तो हमारे घर में ऐसा बच्चा पैदा हो तो हम उसको एक्सेप्ट कर लें, उसको स्वीकार कर लें, लेकिन नहीं कर सकते। कारण, क्योंकि हम काल्पनिक

दुनिया में जी रहे हैं वास्तविकता ये है कि परमात्मा निराकार ज्योतिबिन्दु स्वरूप हैं और जितनी भी विश्व में आत्मायें हैं वो सारी या तो महान आत्मा हैं, या पुण्य आत्मा हैं, या देव आत्मा हैं, या फिर मनुष्य आत्मा है लेकिन कोई भी परमात्मा नहीं है। लेकिन इन बातों को कौन समझायेगा, किसको समझायेगा। उन्हें तो जो भी दिखाई दे रहा है उसे मानते हैं। लेकिन वो भी अंधविश्वास के आधार से। उस पर उनको छोटा-सा बिलीफ(विश्वास) है, बाकी दिन वो बदलता रहता है। उस पर भी पूरी तरह से वो अडिग नहीं है। उस भाव को समझाने के लिए परमपिता शिव निराकार का दिव्य अवतरण होता है। और उस दिव्य अवतरण को ही हम महाशिवरात्रि पर्व के रूप में मनाते हैं।

परमात्मा आकर हम सबको इस अंधेरे से का मतलब ये अज्ञानता की बात है, जिससे हम ये सारी बातें नहीं समझ पा रहे हैं। उससे हमें निकालकर फिर से प्रकाश की ओर ले जा रहे हैं। और वो जो प्रकाश की ओर ले जाने का सिलसिला है वो लम्बा है। क्योंकि जो इतने समय से देह के रूप में देख रहा है वो एकाएक निराकार के रूप में तो नहीं देख पायेगा ना! निराकार के रूप में देखने के लिए उसको थोड़ा टाइम लगेगा। तो इसीलिए शिवलिंग में ज्योतिबिन्दु, एक छोटी-सी आँख और तीन धारियां बनी होती हैं जो परमात्मा के ज्योतिबिन्दु होने का यादगार है। और जितने भी बड़े-बड़े

तीर्थ स्थान हैं वहाँ भी ज्योति स्वरूप परमात्मा को दिखाया गया। वहाँ कोई मूर्ति नहीं है। सारे नाम में या तो गुण हैं या कर्तव्य हैं, तो इस तरह से परमात्मा को हम परख सकते हैं। इस महाशिवरात्रि पर, क्योंकि ये लेख तो एक छोटा-सा माध्यम होता है जिसमें हम एक छोटा-सा क्लू(संकेत) देते हैं कि आप किसी चीज़ को जानें कैसे? लेकिन उसको ठीक से जानने के लिए नजदीकी जो सेवाकेन्द्र हैं ब्रह्माकुमारीज के, वहाँ पर जाकर सत्य परिचय परमात्मा का जरूर लेना चाहिए, क्योंकि ये समय अभी वही चल रहा है।

जब तक हम असलियत के साथ रूबरू नहीं होंगे तब तक हम पूरी तरह से भगवान से प्राप्ति नहीं कर पायेंगे, शक्तियां नहीं ले पायेंगे, अपने आपको अच्छा नहीं बना पायेंगे। ये एक तरह से अनुग्रह है, विनती है कि आप सभी इस बात को समझकर, सुनकर, पढ़ कर चाहे जैसे भी एक बार सेवाकेन्द्र पर जरूर जायें और वहाँ जाकर इस कोर्स को समझें। परमात्मा को समझें, आत्माओं को समझें और अपने भाग्य को समझें ताकि महाशिवरात्रि पर्व को उसकी तरह से मना सकें जैसा वो चाहता है।



डॉ. कु. अनुज भाई, दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न : आप कहते हैं कि आपके पास भगवान आते हैं। यों तो सभी अपने गुरुओं को भगवान कहते हैं, हम कैसे मानें कि आपके यहाँ भगवान आते हैं?

उत्तर : आपका प्रश्न करना उचित है। अनेक भगवान देखकर सच्चे भगवान के बारे में भ्रम होना स्वाभाविक है। पहले तो हमें ये जान लेना चाहिए कि भगवान है कौन? तभी हम निर्णय कर सकेंगे कि भगवान कहाँ आते हैं। भगवान निराकार है, वे देह रहित, जन्म-मरण से न्यारे, ब्रह्मा विष्णु रूप है, ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, सर्वशक्तिवान हैं, वे सर्व गुणों के सिन्धु हैं। अतः किसी भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता। हम ब्रह्मा बाबा को भगवान नहीं कहते, बल्कि उनके तन में भगवान प्रवेश करते थे। जो गुरु स्वयं को भगवान कहते हैं, उनसे पूछिये, क्या वे ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के रचयिता हैं, क्या वे निराकार हैं, क्या वे ज्ञान के सागर हैं, क्या वे सम्पूर्ण हैं? स्पष्ट है कि नहीं हैं। भगवान आकर ज्ञान देते हैं, वे राजयोग सिखाकर मनुष्यात्माओं को सम्पूर्ण बनाते हैं, वे सतयुगी नई सृष्टि की स्थापना करते हैं, वे शिष्य नहीं अपने बच्चे बनाते हैं। वे सबकी प्यार से पालना करते हैं, वे शास्त्र नहीं पढ़ते, मुख्य बात वे सभी को पवित्र व सात्विक बनाते हैं। जहाँ ये लक्षण दिखाई दें, समझ लो वहाँ भगवान अपना कर्तव्य कर रहे हैं।

प्रश्न : आप कहते हैं भगवान भारत में ही आते हैं- ऐसा क्यों? फिर तो भगवान भी पक्षपाती माने जाएंगे। भारत में ऐसा क्या है जो यहीं वे आते हैं?

उत्तर : भारत महान देश है, ये देवभूमि है, यही स्थान दो युग तक स्वर्ग था। यहीं पर पवित्रता की मान्यता है। यही धर्मभूमि व अध्यात्म की भूमि है। विदेशों में कहीं भी यदि किसी को शान्ति की प्यास उठती है, जो भी अध्यात्म की खोज करना चाहते हैं या जो भी योग सीखना चाहते हैं, तो वे भारत में ही आते हैं। भारत ही दो युग तक स्वर्ग था। भारत पवित्र भूमि है, इसलिए भारत को पुनः स्वर्ग बनाने के लिए उन्हें यहीं आना पड़ेगा। पाश्चात्य देशों में तो अति तामसिकता, अति अपवित्रता व अति भौतिकवाद है। आज तो वहाँ ये स्थिति है कि वे भगवान का नाम लेना भी पसंद नहीं करते, तब भला वहाँ भगवान कैसे आयेगा! भारत में ही सबसे ज़्यादा भक्ति, पूजा पाठ देखने को मिलता है। इसलिए भारत ही भगवान की जन्मभूमि व कर्मभूमि है। भारत ही ऐसा देश है जहाँ सर्व धर्मों का सम्मान होता है, इसलिए सर्व का कल्याण करने हेतु भगवान यहीं आते हैं।

प्रश्न : क्या भगवान से मिलना संभव है? सुना है प्रभु-मिलन के लिए तो हजारों वर्ष कठिन तपस्या करनी पड़ती

है। आज तक वह किसी को मिला ही नहीं। आप तो कहते हैं, वे हमसे मिलने आते हैं।

उत्तर : यह सत्य है कि 2500 वर्ष से हमने भक्ति व तप किये, परन्तु हम प्रभु से न मिल पाये और न उनको जान पाये इसलिए उन्हें ही हमसे मिलने आना पड़ा। पहले वे आकर हमें अपनी सत्य पहचान देते हैं। जब हम भगवान को जानते ही नहीं तो भला हम उन्हें ढूँढ़ेंगे कहाँ... सोचो हमारे मन में प्रभु मिलन की इच्छा होती है, इससे ही सिद्ध है कि हमें वे मिलते अवश्य हैं। परन्तु हम उनसे मिलने नहीं जा सकते, वे

मन की बातें

- राजयोगी ब्र. कु. सूर्य भाई



ही हमसे मिलने आते हैं। उनके आने का एक समय भी निश्चित होता है। जब कल्प का अन्त होता है और कलियुग समाप्ति की ओर जाता है, तब वे स्वयं आते हैं- केवल हमसे मिलने के लिए नहीं, बल्कि हमें मनुष्य से देवता बनाने के लिए और कलियुगी दुनिया को सतयुग में बदलने के लिए। इस समय प्रभु मिलन हो रहा है, वह अपना पुनीत प्यार दे रहा है, वह शक्तियां दे रहा है, वह राजयोग सिखा रहा है, परन्तु इसके लिए स्वयं को पवित्र बनाना होगा।

प्रश्न : हमने सुना है ब्रह्माकुमार-कुमारियां कहते हैं कि हमें भगवान पढ़ाते हैं। हमने प्रभु मिलन का सुख लिया है। वे अब भी हमसे मिलने आते हैं, परन्तु विश्वास नहीं होता। कहीं आप भ्रमित तो नहीं हो गये हो। भला भगवान से मिलना इतना सस्ता है क्या?

उत्तर : लाखों बुद्धिमान लोग इसके साक्षी हैं कि हमें भगवान ही पढ़ाते हैं। भगवान ही ज्ञान के सागर हैं, वे शास्त्रों का ज्ञान नहीं देते, बल्कि शास्त्रों का सार समझाते हैं। उनका ज्ञान लेकर कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता, सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है व सत्य की खोज समाप्त हो जाती है।

वे हजारों की सभा में आते हैं। उनके अवतरित होते ही सबको परमात्म मिलन का सुख अनुभव होने लगता है। सभी प्रभु-प्रेम में मग्न हो जाते हैं, सभी को वरदान प्राप्त होते हैं व सभी के चित्त शान्त हो जाते हैं। प्रत्यक्ष अनुभूतियों से सिद्ध हो जाता है कि सामने कोई महान आत्मा नहीं बल्कि स्वयं परमात्मा

ही मनुष्य तन में अवतरित हैं। आप बुद्धिमान हैं। आपने परमात्मा के आने की बात सुनी। यह सुनकर क्या आपके मन में ये विचार नहीं उठा कि देखें तो सही। ये सब क्या है, कैसे आते हैं भगवान। परन्तु इसके लिए भी एक वर्ष तक पवित्र रहकर ईश्वरीय ज्ञान लेना होगा।

प्रश्न : वर्तमान समय चारों ओर भय, पापाचार, भ्रष्टाचार व आसुरीयता का बोलबाला है। क्या यही उचित समय है परमात्मा के अवतरण का?

उत्तर : सत्य कहा आपने धर्म का एक चरण अब समाप्त होता दिख रहा है। यद्यपि चारों ओर असंख्य मंदिर हैं, हर मंदिर में भीड़ भी ज़्यादा ही है। युवकों में भी धर्म की दौड़ दिखाई देती है। परन्तु धर्म मनुष्य के जीवन में नहीं है। स्वार्थ, लोभ, पाप और भ्रष्टाचार ने मनुष्य की बुद्धि को भी भारी कर दिया है। मनुष्य अपने हर अंग से पाप कर रहा है। सचमुच हम महाभारत काल में प्रवेश कर चुके हैं। मिसाइल्स वही अग्निबाण हैं, एटम बम वही ब्रह्मास्त्र हैं। दुर्योधन व दुःशासन की तो कहीं कमी नहीं है। अनेक द्रोपदियों के चौर हरण हो रहे हैं। धर्मगुरु मौन हैं। पापी सिंहासन पर बैठे हैं, पुण्यात्माएं भूखी हैं। अधर्म का ही चहुं ओर बोलबाला है। यह सम्पूर्ण सत्य है कि यही समय कलियुग का अंत है और शिव भगवान अवतरित होकर अपना दिव्य कार्य कर रहे हैं।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुरी और सच्ची शान्ति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल





महाशिवरात्रि... स्वर्णिम दुनिया में बदलने का त्योहार

शिवालयों से सुनाई देती घण्टों की गूंज, शिव पर जल चढ़ाने हेतु आतुर भक्तगण, माताओं के झुण्ड के झुण्ड जिस ओर प्रस्थान करते हैं और अनन्य भक्त जिस दिन शिव दर्शन की कामना रखते हैं, वो महाशिवरात्रि का पर्व पुनः हमारे समक्ष है। यूं तो भारत में पर्व ही पर्व हैं परंतु इस पर्व को महाशिवरात्रि कहा जाता है। भक्त विभिन्न अर्थों में इसे शिव की महारात्रि समझ लेते हैं। परंतु शिव तो रात-दिन से परे हैं और न ही उन्हें कैलाश पर तपस्या करने की आवश्यकता है। वे तो सम्पूर्ण हैं, सदा कर्माती हैं, सभी सिद्धियों के स्वामी हैं, उन्हें तपस्या नहीं करनी है। ये महान कार्य तो महादेव का है जबकि शिव तो देवों के भी देव हैं।

कौन हैं शिव और क्यों मनाई जा रही है शिवरात्रि?

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता हैं शिव, इसलिए उन्हें त्रिमूर्ति कहा जाता है। ॐ के प्रतीक चिन्ह में ऊपर दिखाई जाने वाली बिन्दी उन्हीं की यादगार है, यह रहस्य विदूषकों को भी ज्ञात नहीं। वे ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को ही सर्वोपरि मान लेते हैं, परंतु विवेक भी कहता है कि तीनों के ऊपर भी कोई महासत्ता होनी ही चाहिए और वह परमसत्ता है सर्वशक्तिवान् शिव, जो निराकार है अर्थात् अशरीरी है, महाज्योति है, स्वयं प्रकाशमान है, सूक्ष्मातिसूक्ष्म है, इसलिए उन्हें बिन्दु स्वरूप में ही दर्शाया जाता है, परंतु उस अति सूक्ष्म बिन्दु से अनंत एनर्जी निरंतर चहुं ओर फैलती है।

वे अजन्मा हैं, स्वयंभू (शम्भू) हैं, उनका नाम शंकर नहीं, कल्याणकारी होने के कारण शिव है। वे ब्रह्मलोक अर्थात् परमधाम के वासी हैं, वे इस धरा पर अवतरित होते हैं। जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, जब चारों ओर पाप बढ़ जाता है तब वे आते हैं। जब सभी मनुष्यात्माएं पतित बन जाती हैं, तब वे आते हैं उन्हें पावन बनाने। जब चहुं ओर अज्ञान का अंधकार छा जाता है, तब वे आते हैं ज्ञान का प्रकाश देकर सबके मन के अंधकार को हरने। जब पाँच विकारों की माया सभी को अपने पंजे में जकड़ लेती है और विकारों के नशे

में मनुष्य गहरी नींद सो जाता है, तब वे आते हैं उन्हें जगाने। जब संसार दुःख व अशांति से त्राहि-त्राहि करने लगता है तब वे आते हैं सबके दुःख हरने। उनके आने का निश्चित समय है। हाँ, केवल एक बार। वे भला युग-युग में क्यों आयेंगे! हर युग में तो धर्म की ग्लानि होती ही नहीं। शास्त्र अनुसार भी सतयुग में धर्म के चार चरण, त्रेता में तीन, द्वापर में दो तथा कलियुग में एक चरण धर्म का होता है। कलियुग के अंत में जब वह एक चरण भी दस प्रतिशत रह जाता है, तब वे आते हैं सत्य देवी-देवता धर्म की पुनर्स्थापना करने। और वो समय अब है। ये कलियुग का प्रथम चरण नहीं, अंतिम चरण है।

कलियुग के इस घोर अंधकार में ज्ञानसूर्य प्रकट होकर इस महारात्रि को, सतयुगी दिन में बदलने का अपना दिव्य कार्य कर रहे हैं। उनका वाहन

जिन्होंने
जन्म-जन्म भगवान की
भक्ति की या देवी-देवताओं की
भक्ति की, उन्हें भक्ति का फल देने के
लिए भगवान को आना पड़ता है। और अब वे
भक्ति का फल दे रहे हैं। हजारों वर्ष की भक्ति
का फल होता है...भगवान से मिलन। और
भगवान आकर देते हैं ज्ञान। और ये दोनों
प्राप्तियां अब हो रही हैं। आप उन्हें
जानो और पहचानो।

नंदी है। यह गृह्य रहस्य है। भला बैल पर निराकार कैसे विराजमान होंगे! वे प्रजापिता ब्रह्मा के मनुष्य तन में प्रवेश होकर अपने कार्य करते हैं। छोटे-बड़े दो नंदी भी दिखाये जाते हैं। इनका भी अद्भुत रहस्य है।

भक्ति का फल देने आ गये हैं शिव

जिन्होंने जन्म-जन्म भगवान की भक्ति की या देवी-देवताओं की भक्ति की, उन्हें भक्ति का फल देने के लिए भगवान को आना पड़ता है। और अब वे भक्ति का फल दे रहे हैं। हजारों वर्ष की भक्ति का फल होता है...भगवान से मिलन। और भगवान आकर देते हैं ज्ञान। और ये दोनों प्राप्तियां अब हो रही हैं।

हे प्रभु प्रेमी भक्तों, अपने से पूछो, जबकि भगवान भक्ति का फल देने आ गये हैं, तब भी

क्या आप भक्ति ही करते रहेंगे? ये तो ऐसे ही है जैसे सूर्य के उदय होने के बाद व उसका प्रकाश चारों ओर फैलने के बाद भी दीपक जलाते रहना। तो आइये, अब भक्ति का फल पाइये। आइये, अब प्रभु मिलन का सुख पाइये। आओ, अपनी जन्म-जन्म की प्यास मिटाने। आओ, भगवान से वरदान पाने। आओ, भगवान से सर्व सम्बंध निभाने।

जगाने आ गये हैं शिव...

भक्तगण मंदिरों में शिवरात्रि पर सारी रात जागरण करते हैं। वे इंतजार करते हैं कि शिव आयेंगे, उन्हें दर्शन देंगे। वे नशा भी करते रहते हैं और समझते हैं कि हम महादेव को फॉलो कर रहे हैं। परंतु शायद ही किसी विरले सच्चे भक्त को उनके दर्शन होते हों। वैसे ही तामसिक नशे में चूर व्यक्ति भला भगवान के दर्शनों का अधिकारी है भी कहाँ! ये तो ईश्वरीय नशे की बात है। अब स्वयं ज्ञान के सागर आकर सभी भक्तों को जगा रहे हैं। वे कह रहे हैं कि हे मेरे प्यारे भक्तों, तुम तो मेरे बच्चे हो। तुम अज्ञान की व विकारों की नींद में सो गये हो। अब जागो, तुम तो देवता थे, महान थे, पवित्र थे। अब स्वयं को पहचानो। वे सत्य ज्ञान देकर आत्म-जागृति कर रहे हैं। यही सच्चा जागरण है। तो सभी जग जाओ और देखो तुम्हारा परमपिता शिव तुम्हारे सामने है, उसे पहचानो।

शिवरात्रि पर सदा के लिए व्रत लो

भोजन का व्रत ही पर्याप्त नहीं। शिव भक्तों को वैसा भोजन भी नहीं खाना चाहिए जो शिव को स्वीकार नहीं। एक दिन भोजन का व्रत कर लेना और पूरा वर्ष तामसिक भोजन खाना शिव को पसंद नहीं। इस शिवरात्रि पर सात्विक भोजन खाने का व्रत लें। हो सके तो सभी शिव के भक्त व शिव के वत्स इस महापर्व पर क्रोध को त्यागने का व्रत लें अथवा अपनी किसी बुराई को सदा के लिए त्यागने का संकल्प करें तो शिवरात्रि का पर्व आपके लिए वरदान बन जाएगा।

शिवरात्रि पर शिव-मिलन करें

कलियुग की इस महारात्रि में शिव स्वयं आकर मिलन मना रहे हैं। वे आपका आह्वान कर रहे हैं। जन्म-जन्म तो आपने उनका आह्वान किया। अब आ जाओ और अपने परमपिता से मिलन मनाओ, उनका सच्चा प्यार अनुभव करो और उनकी पालना का सुख लो। फिर ये न कहना कि हमको बताया नहीं।



मण्डलेश्वर-म.प्र.। नगर परिषद की नवीन कार्यकारिणी में नगर अध्यक्ष बनने पर विशदीप मायदे को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. मंगला बहन व पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. विजयलक्ष्मी साथी।



छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के 85वें स्थापना दिवस एवं दीपावली पर्व पर आयोजित चैतन्य झाँकी कार्यक्रम में विधायक आलोक चतुर्वेदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.शैलजा बहन। इस दौरान कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार सुरेंद्र अग्रवाल, मुन्नीलाल ठेकेदार सहित लगभग 350 लोग शामिल रहे।



गंजबासौदा-म.प्र.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में विनोद कुमार शर्मा प्रथम एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट विदिशा, एस.डी.एम.रोशन राय, पूनम मिश्रा द्वितीय एडिशनल मजिस्ट्रेट, धनेन्द्र सिंह परमार मजिस्ट्रेट, पार्थ शंकर मिश्रा मजिस्ट्रेट, राहुल निरकारी मजिस्ट्रेट, कृष्ण बरार मजिस्ट्रेट आदि को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. बहनें।



हैदराबाद-तेलंगाना। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत कॉन्टिनेंटल हॉस्पिटल में ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, शांति सरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कुलदीप दीदी तथा ब्र.कु.उमा बहन ने कोरोना वॉरियर डॉक्टर, नर्सों एवं हॉस्पिटल स्टाफ को मेडल व सर्टिफिकेट भेंट कर सम्मानित किया।



इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। ओम शांति भवन में गीता जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित धर्म सम्मेलन में मंचासीन हैं बायें से ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. पूनम बहन, पार्थसारथी दास,इस्कॉन टेम्पल, बी.डी. राठी,रिटा. हाई कोर्ट जज, राजयोगिनी ब्र.कु. आरती दीदी, महामण्डलेश्वर प्रणवानंद जी, शैलेंद्र जी,भागवत आचार्य, ब्र.कु. नारायण भाई तथा ब्र.कु. दीपाली बहन।



शेगांव-महा.। जयश्री काटकर,मुख्य अधिकारी नगरपालिका को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शारदा बहन एवं ब्र.कु.अनीता बहन।



ग्वालियर-लक्ष्कर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल विंग द्वारा राष्ट्रीय अभियान मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत के अंतर्गत ग्लोरी हाई स्कूल में आयोजित 'मेरा ग्वालियर व्यसन मुक्त ग्वालियर' व्यसन मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए माउण्ट आबू से चिकित्सा प्रभाग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह। इस मौके पर डॉ. ब्रजेश सिंगल, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.आदर्श दीदी, ब्र.कु. प्रहलाद भाई, ब्र.कु. रंजू दीदी सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मण्डलेश्वर-म.प्र.। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसर पंच-ज के तहत खरगोन जिले के मण्डलेश्वर नगर में पर्यावरण संरक्षण एवं स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम के दौरान जिला न्यायाधीश एवं सचिव नरेन्द्र पटेल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंगला बहन। साथ में हैं योग विशेषज्ञ कैप्टन डॉ. हेमंत सुकलीकर व ब्र.कु.बसु बहन ।

हरीतकी के अद्भुत...

-पेज 4 का शेष

मूत्रकृच्छ या पेशाब संबंधी बीमारी में फायदा

मूत्र संबंधी बहुत तरह की समस्याएं होती हैं जैसे देर से पेशाब आना या रूक-रूक कर आना, कम मात्रा में पेशाब होना, पेशाब करते वक्त जलन या दर्द होना आदि। इन सब समस्याओं में हरीतकी बहुत काम आती है। हरीतकी, गोखरू, धान्यक, यवासा तथा पाषाण-भेद को समान मात्रा में लेकर 500 मिली जल में उबालें, 250 मिली रहने पर उतार लें। अब इस काढ़े में मधु मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम 10-30 मिली मात्रा में सेवन करने से मूत्र त्याग में कठिनाई, मूत्र मार्ग की जलन आदि रोगों में लाभ होता है।

कामला या पीलिया में फायदे

आजकल के भागदौड़ भरी जिंदगी में सबसे ज्यादा खान-पान पर ही असर पड़ता है। पीलिया में हरीतकी उपचार स्वरूप काम करती है। लौह भस्म, हरड़ तथा हल्दी इनको समान मात्रा में मिलाकर 500ग्राम से 1 ग्राम मात्रा में लेकर घी एवं मधु से अथवा केवल 1ग्राम हरड़ को गुड़ और मधु के साथ मिलाकर दिन में दो से तीन बार सेवन करने से कामला में लाभ होता है।

कुष्ठ रोग में फायदे

कुष्ठ रोग की परेशानी को कम करने के लिए 20-50 मिली गोमूत्र को 3-6 ग्राम हरड़ चूर्ण के साथ सुबह शाम सेवन करने से फायदा मिलता है।

हरड़, गुड़, तिल तेल, मिर्च, सौंठ तथा पीपल को समान मात्रा में पीसकर 2-4 ग्राम की मात्रा में लेकर एक महीने तक सुबह-शाम सेवन करने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।

हरीतकी कहां पाई और उगाई जाती है

हरड़ का वृक्ष पर्वतीय प्रदेशों और जंगलों में 1300 मी की ऊँचाई तक पाया जाता है।

हजारों लोगों की उपस्थिति में 16 बहनों ने



दिल्ली-हरिनगर। ब्रह्माकुमारीज एवं मानव कल्याण आध्यात्मिक संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में हरिनगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में सोलह बहनों के ईश्वरीय सेवार्थ भव्य जीवन समर्पण समारोह का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक अध्यक्ष, प्रसिद्ध चिन्तक, कवि, लेखक एवं समाज सुधारक आचार्य लोकेशु मुनि ने समर्पित होने वाली ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा होने वाली सेवाओं की सफलता हेतु जैन धर्म की ओर से शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सच्ची आध्यात्मिक सेवा द्वारा अनेकता में एकात्म भाव स्थापित होता है जो कि ब्रह्माकुमारी बहनों समग्र मानवता को वसुधैव कुटुम्बकम् व विश्व बंधुत्व की भावना से जोड़ने का काम कर रही हैं। मूल्यनिष्ठ शिक्षा एवं राजयोग ध्यान द्वारा मानव में सुखदयी संस्कार व बेहतर जीवन निर्माण कर एक सुखमय संसार बनाने का कार्य जो ब्रह्माकुमारी बहनों निःशुल्क पिछले आठ दशकों से भारत तथा विदेश में कर

रही हैं, वह वास्तव में सबके लिए अनुकरणीय है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि इस संस्थान ने लाखों बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का बीड़ा उठाया है। यह संस्था सही अर्थ

सोलह बहनों ने स्वेच्छा से, हजारों लोगों से भरी सभा में, अपने माता-पिता के साथ जन-कल्याण हेतु अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित करने के नियम व मर्यादाओं की प्रतिज्ञा ली...

में विश्व की बेटियों को शिक्षित और सशक्त करने की सेवा कर रही है। प्रख्यात पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने समर्पित होने वाली कन्याओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि ये बहनें किसी भय, प्रलोभन या बहकावे में आकर नहीं, बल्कि स्वयं की इच्छा और माता-पिता की स्वीकृति से अपना

जीवन समर्पित कर रही हैं। आज के समय में ऐसी नौजवान बालिकाओं ने सात्विक व सदाचारी जीवन का व्रत लिया है जो वास्तव में सब के लिए प्रेरणा का स्रोत है। हरिनगर एवं सम्बंधित सेवाकेन्द्रों की मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि सादा जीवन और उच्च विचार के साथ-साथ शाकाहारी खानपान ही हमारे जीवन को स्वस्थ, सुखी, शक्तिशाली व सुरक्षित रखता है। भारतीय नौ सेना के उप प्रमुख वाइस एडमिरल एन.एन. घोरमडे ने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा समाज की सेवा के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों का त्याग सराहनीय है। उन्होंने कहा कि यह संस्था नारी सशक्तिकरण की अद्भुत मिसाल है। इस अवसर पर संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय, ओआरसी गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, अहमदाबाद से आयी राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, न्यायिक प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी आदि ने अपनी शुभकामनाएं दीं।

‘ब्रह्माकुमारीज’ पूरे विश्व में आध्यात्मिक शक्ति का प्रबल केन्द्र - डॉ. वीरेंद्र कुमार

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज पूरे विश्व में आध्यात्मिक शक्ति के प्रबल केन्द्र के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। दुनिया के देशों ने चाहे कितनी भी प्रगति क्यों न कर ली हो, लेकिन आध्यात्मिक चेतना की दृष्टि से भारत सबसे महान है। उक्त विचार भारत सरकार के केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने ओम शांति रिट्रीट सेंटर के 21वें वार्षिकोत्सव के अंतर्गत

बुजमोहन भाई ने कहा कि ओम शांति रिट्रीट सेंटर ने 21 वर्षों में समाज के हर वर्ग की सेवा की। भारत को विश्व का सिरमौर बनाना ब्रह्माकुमारीज का मुख्य उद्देश्य है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही मानव के अंदर चारित्रिक और नैतिक मूल्यों का विकास हो सकता है। नेपाल के ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारत के



‘स्वर्णिम समाज के उदय के लिए आध्यात्मिकता’ विषय पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने कहा कि इस परिसर में आने मात्र से ही जिस अद्भुत ऊर्जा का आभास होता है, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। ब्रह्माकुमारीज मन की सच्ची शांति प्राप्त करने की सहज विधि बताती है। ये बहनें बड़ी ही तन्मयता के साथ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार और प्रसार कर रही हैं। एमिटी विश्वविद्यालय, हरियाणा के प्रो वाइस चांसलर डॉ. विकास मधुकर ने कहा कि बिना संस्कार के शिक्षा अधूरी है। इसलिए आज सरकार भी शिक्षा में नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देने जा रही है। ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु.

प्राचीन राजयोग की आज सबको आवश्यकता है। नेपाल में राजसत्ता से जुड़ी महान हस्तियां भी योग सीखने के लिए सेवाकेन्द्र में आती हैं। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि असली समाज सेवा एक-दूसरे के मनोबल को बढ़ाना है। खुशहाल समाज के लिए नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य जरूरी हैं। शक्ति नगर सेवाकेन्द्र प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, करोल बाग सेवाकेन्द्र प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी, खानपुर सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. आशा बहन, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्षा शीला काकडे आदि ने भी अपनी शुभकामनाएं दीं। ब्र.कु. रजनी बहन ने सभी को योग की गहन अनुभूति कराई। मंच संचालन ब्र.कु. हुसैन और ब्र.कु. ईशु ने किया।

‘नशा’ ले जाता शारीरिक व आर्थिक पतन की ओर

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के चिकित्सा सेवा प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय अभियान ‘मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत’ के अंतर्गत इंडियन मेडिकल एसोसिएशन एवं कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के संयुक्त तत्वाधान में ‘मेरा ग्वालियर व्यसन मुक्त ग्वालियर’ अभियान का शुभारम्भ शीतला सहाय सभागार में हुआ। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. राहुल सप्रा, अध्यक्ष, आईएमए ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन से दुनिया में शांति स्थापित करने का बहुत श्रेष्ठ कार्य यह बहनें कर रही हैं। समाज में आज ऐसे कार्यों की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इंडियन मेडिकल एसोसिएशन इस अभियान से जुड़कर हर कार्यक्रम में पूरी

के सेक्रेटरी ब्र.कु. डॉ. बनारसी भाई ने कहा कि वर्ष 1985 में ब्रह्माकुमारीज द्वारा मेडिकल विंग की नींव रखी गई थी। तब से लेकर मेडिकल विंग समाज की सेवा में समर्पित है।

समाज में व्यसनमुक्ति जनजागृति का अभियान चला रहा है जो समय की जरूरत है। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श दीदी ने सभी को अभियान से सम्बंधित

डॉ. प्रताप मिश्रा, अयरेक्टर, ग्लोबल हॉस्पिटल माउंट आबू ने व्यसन से होने वाले दुष्परभावों के बारे में बताया कि नशा और कुछ नहीं, हमारी नकारात्मक सोच का ही परिणाम है। किसी भी तरह का नशा करने के बाद कुछ समय के लिए हमारे माइंड में जो संदेशवाहक कोशिकाएं हैं वह शांत हो जाती हैं, अपना संदेश देना माइंड को बंद कर देती हैं और हमें लगता है कि नशे से हमें आनंद आ रहा है। जबकि हकीकत ये है कि इससे हमारी माइंड की पावर ही कम होती है।

इन वर्षों में मेडिकल क्षेत्र में आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य को लेकर कई प्रयोग हुए हैं जो सफल रहे हैं एवं इनसे लोगों की गंभीर

जानकारियों से अवगत कराया। डॉ. अजीत सिंह, डायरेक्टर, बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल रिसर्च ग्वालियर ने कहा कि हम



तरह से सहयोगी बनेगा। कैंसर हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. बी.आर. श्रीवास्तव ने बताया कि आज 30 वर्ष के व्यक्ति को भी मुख का कैंसर हो जाता है। उसका कारण है कि आज छोटी उम्र के बच्चे सुपारी का सेवन करते हैं बाद में वही उनकी आदत बन जाती है। मुझे विश्वास है कि ब्रह्माकुमारीज संस्था जो प्रयास कर रही है उसका परिणाम बहुत अच्छा होगा। माउंट आबू से ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग

बीमारियां ठीक हुई हैं, 12 लाख से अधिक लोग नशा मुक्त हो चुके हैं जो संस्थान के लिए गौरव की बात है। मेडिकल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. संजय लहारिया ने इस अभियान को एक आंदोलन के रूप में बताया। उन्होंने कहा कि हमें हमारे अंदर विद्यमान सभी विकृतियों से मुक्ति पानी है तो इसमें अध्यात्म हमें बहुत मदद करेगा क्योंकि अध्यात्म का ज्ञान हमें खुद से जोड़ता है। डॉ. गोमती अग्रवाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान

शुरूआत अपने घर से करें, कि हम अपने परिवार के सदस्यों को किसी भी हालत में नशा नहीं करने देंगे। कमल मखीजनी, पूर्व जिलाध्यक्ष भा.ज.पा. सहित सभी वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। ब्र.कु. मनीषा बहन, माउंट आबू ने सभी को राजयोग का अभ्यास कराया। संचालन ब्र.कु. डॉ. गुरचरण तथा आभार डॉ. ब्रजेश सिंघल ने किया। कार्यक्रम में ब्र.कु. रंजू बहन, ब्र.कु. प्रहलाद भाई सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।



तनाव मुक्ति, शांति अनुभूति राजयोग शिविर का छतरपुर में सफल आयोजन

छतरपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा श्रीमद्भगवद् गीता का व्यावहारिक स्वरूप कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित ‘तनाव मुक्ति, शांति अनुभूति राजयोग शिविर’ का आयोजन छतरपुर के चाचा जी की रसोई सभागार में किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, माउंट आबू ने प्रथम सत्र के विषय ‘स्व की शक्ति की पहचान से तनाव मुक्त जीवन’ पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आध्यात्मिक प्रतिरोधक शक्ति जब कम होती है तो हर एक छोटी-बड़ी बात मन

को बढ़ाने की आवश्यकता है। आज के व्यक्ति के पास आध्यात्मिकता के लिए टाइम नहीं है। आध्यात्मिक चिंतन मन के लिए पौष्टिक आहार है। मेडिटेशन और आध्यात्मिकता के माध्यम से हम अपने मन की धार तेज करें, मन को सशक्त और पावरफुल बनायें। उन्होंने कहा कि जीवन को खेल की रीति से खेलें। खेल की तरह ही जीवन में चारों ओर से समस्याओं से घिरे होने पर भी जो इसमें सही निर्णय लेता है, वह सफल है। चुनौती के अंदर अच्छे डिजीन लेने होते हैं, तब सभी एप्रेशिएट करते हैं। चुनौतियों को सकारात्मकता से पार करने वाले को ‘हीरो’ कहते हैं। कार्यक्रम में महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलसचिव जे.पी.मिश्र, जिले के अग्रणी कॉलेज कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य एल.एल. कोरी, सीआईएसएफ डायरेक्टर उर्वशी जी, पूर्व नपा अध्यक्ष अर्चना सिंह सहित नगर के गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। कार्यक्रम संचालन व शब्दों से सभी का स्वागत छतरपुर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन ने किया।

चुनौतियों को सकारात्मकता से पार करने वाले ही हीरो : ब्र.कु. उषा बहन

को प्रभावित करती है। तनाव का मतलब जब किसी के ऊपर दबाव बढ़ता है और उसके मन की कैपेसिटी उतनी नहीं होती, तब तनाव होता है। डर तनाव का ही एक स्वरूप है। आज व्यक्ति के ऊपर कई दबाव हैं- भूतकाल का दबाव, भविष्य का दबाव साथ ही वर्तमान का दबाव। इन सब दबाव के बीच में व्यक्ति है। दीदी ने कहा कि जिस युग में हम जी रहे हैं वह अनिश्चितता का युग है। इन सभी दबाव से निकलने के लिए स्पीरिचुअल इम्यूनिटी